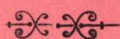


जामुन और उसके सा उपयोग



लेखक

आयुर्वेदाचार्य पं० गंगा प्रसाद गांगेय
प्रधानाचार्य एवं प्रधान चिकित्सक
भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ एवं चिकित्सालय
सरसई, पो० खागा,
जिला—फतेहपुर



प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड
उत्तराधिकारी—नवल किशोर बुकडिपो, लखनऊ
१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ—२२६००१

[सर्वाधिकार सुरक्षित]



तेजकुमार भार्गव द्वारा

तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित

प्रथम बार ३०००]

१९८४

[मूल्य

T.K.B.D.
Lko.

Rs. 7-

दो शब्द

जामुन एक सर्व सुपरिचित फल-वृक्ष है, जिसके पेड़ वनों, उप-
वनों, सड़कों, नहरों और परती भूमि में सर्वत्र पाये जाते हैं। जून-
जुलाई में जब जामुन के फल पकते हैं, तब ग्रामीण और नागरिक सभी
लोग परिपक्व मधुराम्ल सरस जम्बू फलों का रसास्वादन करते हैं।
उस समय कुछ लोग जामुनों का रस निकाल कर उसका सिरका बना-
कर रख लेते हैं। इसके अतिरिक्त जामुन और उसके वृक्ष के औषधीय
प्रयोगों से प्रायः सर्व साधारण लोग अनभिज्ञ हैं। सर्व-परिचित और
सर्वत्र सुलभ जामुन एक औषध गुण विशिष्ट वृक्ष है। जामुन के वृक्ष
की छाल, पत्तों, फलों और फलों की गुठली सबके औषधीय उपयोग हैं।

बहुत से आयुर्वेदीय चिकित्सा ग्रन्थों और चिकित्सा-सम्बन्धी
पत्रिकाओं से जामुन के गुण धर्म, प्रभाव और विभिन्न रोगों पर जामुन
के औषधीय प्रयोगों का संकलन कर इस पुस्तक का प्रणयन किया
गया है।

आशा है, गृह-चिकित्सा से अभिरुचि रखने वाले पाठकों और
आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के नये चिकित्सकों के लिए यह पुस्तक
पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होगी।

सरसई,
पो० खागा, जिला फतेहपुर
दिनांक : १-२-५३

गंगा प्रसाद गांगेय

जामुन और उसके सौ उपयोग

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
	परिचय, जातिभेद, विभिन्न भाषाओं में नाम, खाद्य-तत्त्व, रासायनिक संगठन, आयुर्वेद मतानुसार गुण धर्म, जामुन खाने का नियम,	
	जामुन के कुछ विशिष्ट योग	१-११
१.	जामुन का सिरका या जम्बुद्राव	११
२.	जम्ब्वारिष्ट	१४
३.	जामुन का शर्बत	१४
४.	जम्बु अवलेह	१५
५.	जम्बुवाद्यासव	१५
६.	जम्बुमज्जादि चूर्ण	१६
७.	मधुमेह	१७
८.	बहुभूत	२२
९.	अतिसार	२३
१०.	आमातिसार	२३
११.	रक्तातिसार	२५
१२.	संग्रहणी	२७
१३.	अतिसार और संग्रहणी	२८
१४.	अतिसार, संग्रहणी, ज्वर, रक्तपित्तादि	२८
१५.	काँच निकलना	२६
१६.	छर्दि (वमन)	२६
१७.	वमन और अतिसार	३१
१८.	वमन में रक्त आना	३१
१९.	तृषा (प्यास)	३१
२०.	तृषा और दाह	३२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

२१.	ज्वर, तृषा, वमन	...	...	३२
२२.	कफ विकार तथा वमन	...	...	३३
२३.	पित्त विकार और वमन	...	...	३३
२४.	पित्त-प्रकोप	...	...	३३
२५.	कफ ज्वर तथा वातज्वर	...	...	३३
२६.	मन्थर ज्वर (मोतीझला)	...	...	३४
२७.	जुकाम होते रहने पर	...	...	३४
२८.	श्वास और फुफ्फुस विकार	...	...	३५
२९.	अर्श (बवासीर)	...	...	३५
३०.	प्लीहा-वृद्धि	...	...	३७
३१.	प्लीहा तथा आमाशय विकार	...	...	३८
३२.	जलोदर तथा प्लीहा	...	...	३८
३३.	अम्लपित्त	...	...	३९
३४.	रक्तपित्त	...	...	४०
३५.	नकसीर	...	...	४१
३६.	शीतपित्त या पित्ती उछलना	...	...	४१
३७.	गण्डमाला	...	...	४२
३८.	पलित रोग	...	...	४३
३९.	नेत्र पीड़ा	...	...	४४
४०.	मोतियाबिन्द	...	...	४४
४१.	दन्त विकार	...	...	४५
४२.	दाँतों से खून आना	...	...	४५
४३.	मसूढ़ों की सूजन तथा मुख विकार	...	...	४५
४४.	दाँतों और मसूढ़ों की शिथिलता	...	...	४६
४५.	मुख पाक	...	...	४६

४६.	कर्णपाक	...	...	४७
४७.	स्वर भंग (गला बैठना)	...	...	४७
	पुरुष रोग	...	...	४८
४८.	घातु स्राव	...	...	४८
४९.	प्रमेह	...	...	४९
५०.	प्रमेह, मधुमेह, वायु विकार	...	...	५०
५१.	उपदंश-जन्य लिंग सूजन और पीड़ा	...	...	५०
५२.	उपदंश के वर्णों पर	...	...	५०
	नारी रोग	...	...	५०
५३.	रजोधर्म में अधिक रक्तस्राव	...	...	५१
५४.	वातज रजस्राव विकार	...	...	५२
५५.	विप्लुता योनि रोग	...	...	५२
५६.	योनि रोग	...	...	५२
५७.	वन्ध्या उपचार	...	...	५३
५८.	गर्भिणी का अतिसार	...	...	५४
५९.	गर्भिणी की संग्रहणी	...	...	५४
६०.	नया प्रदर	...	...	५४
६१.	श्वेत प्रदर	...	...	५५
६२.	रक्त प्रदर	...	...	५५
६३.	सर्व प्रदर	...	...	५६
६४.	पुराना प्रदर	...	...	५७
६५.	प्रदर, योनिरोग, अतिसार आदि	...	...	५७
६६.	सोम रोग	...	...	५८
६७.	प्रसूता का दुग्ध विकार	...	...	५९
६८.	स्तन पुष्टीकरण	...	...	५९
६९.	भग-संकोचन	...	...	५९
	बाल रोग	...	...	६०
७०.	बालातिसार	...	...	६०
७१.	वमन, ज्वर, रक्तातिसार	...	...	६०
७२.	डब्बा (पसली चलना)	...	...	६०

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
७३.	बच्चों की हिचकी	६१
७४.	बालकों के ब्रण	६१
७५.	बालक का मुखपाक	६१
७६.	विसर्प (मुखवाद)	६१
७७.	सिध्म (सेहवा या छीप)	६२
७८.	मुख के मस्से	६३
७९.	युवापिडिका या मुँहासे (Acne)	६३
८०.	झाई	६४
८१.	शरीर गंध	६४
८२.	अधिक पसीना और दुर्गन्धि	६५
८३.	अग्नि दग्ध	६५
८४.	अरुणिका (बाराही या गंज)	६५
८५.	कखवारी या कखराली	६५
८६.	फोड़ा पकाने के लिए	६६
८७.	घावों के लिए मलहम	६६
८८.	ब्रणादि के कारण विकृत त्वचा के रंग पर	६८
८९.	जूते काटने पर	६८
९०.	पेट में बाल या लोहा चले जाने पर	६८
९१.	घाव से रक्त स्राव	६९
९२.	अन्हौरियाँ (घमौरियाँ)	६९
९३.	आम का अजीर्ण	६९
	स्थायर जंगम विष	
९४.	सर्प विष	७०
९५.	बिच्छू विष	७०
९६.	श्वान विष	७०
९७.	वत्सनाभ विष	७०
९८.	कुचले के विष पर	७१
९९.	अफीम का विष	७१
१००.	भाँग का नशा	७१

जामुन और उसके सौ उपयोग

जामुन से सभी परिचित हैं। अपने देश में बागों और जंगलों में, नहरों और सड़कों के किनारे जामुन के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं। हरी, चिकनी और सघन पत्तियों से भरा हुआ जामुन का वृक्ष बहुत सुहावना लगता है। वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में—जून-जुलाई के महीनों में जब जामुन के फल पकते हैं, तब छोटे-बड़े सभी काले-काले चिकने रसदार फलों का रसास्वादन करते हैं। जामुन के पके फल खाने में और फलों का सिरका बनाकर उदर-व्याधियों में उपयोग किया जाता है। जामुन की छाल, पत्ते, फल, फलों की गुठली सभी अंग औषधि-गुण सम्पन्न होते हैं।

जामुन फलादि वर्ग एवं लवंग कुल (Myrtaceae) का सदैव हरा-भरा रहने वाला वृक्ष है। जामुन के पत्ते ३-६ इंच लम्बे, २-३ इंच चौड़े पीपल के पत्तों की तरह चिकने, गहरे हरे और चमकदार होते हैं। बसन्त ऋतु में जामुन में हरिताभ श्वेत रंग के गुच्छों में फूल आते हैं। फिर इन्हीं फूलों में हरे रंग के

फल निकलते हैं, जो धीरे-धीरे बढ़ते हुए ग्रीष्मान्त में—जून-जुलाई में पकने लगते हैं। वर्षा हो जाने से जामुन के फल बड़ी शीघ्रता से फूल जाते हैं और रसीले हो जाते हैं। ये फल $\frac{1}{2}$ इंच से १ इंच तक लम्बे, $\frac{1}{2}$ इंच से १ इंच मोटे लम्बोतरे अण्डाकार, कच्ची अवस्था में हरे, कुछ पकने पर लाल बैंगनी रंग के और अच्छी तरह पक जाने पर गहरे नीले-काले रंग के हो जाते हैं। फलों के भीतर लम्बी गुठली होती है। पक जाने पर जामुन के फल बड़ी रुचि के साथ खाये जाते हैं, औषधि-कार्य में आते हैं और उनका रस निकाल कर सिरका बनाया जाता है। जामुन का फल जितना ही बड़ा होता है, उतना ही अधिक सुस्वादु और गुणकारी होता है।

जामुन की कई जातियाँ-उपजातियाँ होती हैं। उनमें से ये जातियाँ प्रसिद्ध हैं—(१) राज जम्बू (बड़ा जामुन)। इसके फल बड़े और गूदेदार होते हैं। जाति भेद और स्थान-भेद से बड़े जामुन के भी कई भेद होते हैं। एक जामुन को फरेंदा कहते हैं। इसका फल बड़ा, गूदेदार और स्वादिष्ट होता है। बड़े जामुनों में ही एक खट्टा जामुन होता है। खट्टे जामुन के फल मीठे जामुन से दो-तीन सप्ताह बाद पकते हैं। खूब

पक जाने पर खट्टे जामुन भी खाने में बहुत रुचिकर लगते हैं और इनका सिरका भी बहुत अच्छा होता है। (२) क्षुद्र जम्बू या छोटी जामुन, जिसे वनजामुन या कठजामुन भी कहते हैं। इसके वृक्ष, पत्तियाँ और फल बड़े जामुन से छोटे होते हैं। फल में गूदा बहुत कम होता है और यह खाने में उतनी स्वादिष्ट भी नहीं होती। इसका स्वाद अम्ल, कषाय और अल्प मधुर होता है। इसमें ग्राही (मल बाँधने का) गुण अधिक होता है। (३) नदी जम्बू और काक जम्बू। ये क्षुद्र जम्बू के ही भेद हैं। जंगलों में नदी-नालों के किनारे कहीं-कहीं इसके वृक्षों की पत्तियाँ दिखाई देती हैं। इन्हें जल-जामुन भी कहते हैं। इसके पत्ते कुछ छोटे कनेर के पत्तों जैसे, फल छोटे जामुन से भी छोटे होते हैं। इसके वृक्ष की शाखायें प्रायः जड़ के पास से ही निकलती हैं। (४) भूमि जम्बू। इसका वृक्ष झाड़ीदार छोटा तथा फल मटर के दाने जैसे होते हैं। यह हिमालय तथा दक्षिण की पहाड़ियों पर अधिकता से होता है।

एक विदेशी जामुन, जिसे गुलाब जामुन कहते हैं, बंगाल और वर्मा में होता है। इसके वृक्ष राज जम्बू की अपेक्षा छोटे, शाखायें बिखरी हुई तथा पत्ते भी

कुछ छोटे, किन्तु फल अधिक बड़े लम्बे, आकार में नींबू के बराबर किन्तु कुछ चपटे-से, गुलाबी रंग के, भीतर सफेद, गूदा गुलाब की सी गन्ध वाला, स्वाद में मधुर सुस्वादु, गुठली छोटी गोल भूरे रंग की होती है। इसके फूल कुछ लालिमा युक्त सफेद रंग के २-३ इंच लम्बे मौलसिरी के फूलों जैसे होते हैं। इसे बंगाल में गोलाब जाम, लैटिन में युजेनिया जंबोस (*Eugenia Jambos*) तथा अंग्रेजी में रोज एपल (*Rose Apple*) कहते हैं। इसके फल गुण में शीतल, रुक्ष, आंत्रसंकोचक, गुरु तथा त्रिदोषनाशक हैं। फलों से अर्क गुलाब भी बनाया जाता है। यह मेवा की तरह खाया जाता है। यह हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत को बलप्रद है। अधिक खाने से आध्मान (अफारा) कारक है। गुठली संग्राही है। अतिसार में इसका चूर्ण दिया जाता है। इसमें मिश्री तथा सोंठ चूर्ण मिलाकर शुक्रप्रमेह में दिया जाता है। इसकी छाल मधुर, कसैली, उष्ण, रुक्ष, आंत्र-संकोचक, श्वास, तृष्णा, अतिसार आदि में लाभप्रद है।

जामुन की जितनी जातियाँ हैं, उनमें राजजम्बू ही श्रेष्ठ माना जाता है। यह भारत के बाग-बगीचों में सर्वत्र लगाया जाता है।

विभिन्न भाषाओं में जामुन के नाम

संस्कृत—जम्बू, महाजम्बू, राजजम्बू, महास्कंधा, वृहत्फला; क्षुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा; काकजम्बू, काक-वल्लभा, नादेयी, क्षुद्रफला। राजजम्बू को फलेन्द्रा भी कहते हैं।

हिन्दी—जामुन, फरेंद (फलेन्द्र), छोटी जामुन या कठजामुन इत्यादि।

मराठी—राय जामूल, थोर जामूल।

गुजराती—जांबो।

बंगला—कालाजाम।

अंग्रेजी—जाम्बुल (*Jambul*) तथा छोटी जामुन ब्लैक बेरी (*Black Berry*)।

लैटिन—युजेनिया जम्बोलाना (*Eugenia Jambolana*), यु० फ्लुटिकोसा (*U. Phlaticosa*)।

खाद्य तत्व—जामुन में १९.७ कार्बोज, ०.७ प्रोटीन, ०.१ वसा तथा थोड़ी मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है।

गुठली का रासायनिक संगठन—जामुन के बीजों में एक जम्बोलिन (*Jamboline*) नामक ग्लुकोसाइड पाया जाता है। इसकी विशेषता यह है कि यह स्टार्च को शर्करा में परिवर्तित होने से रोकता है। फेनिल

युक्त एक एलाजिक एसिड (Ellagic Acid), क्लोरो-फिल तथा पीताभ सुगंधित तेल, वसा, राल, गैलिक एसिड, अलव्यूमिन आदि अनेक बहुमूल्य तत्व और एक प्रकार के सौम्य लौह का पर्याप्त अंश इसमें पाया जाता है। यह लौह निर्दोष तो होता ही है, रक्त से सब प्रकार के विकार नष्ट कर यकृत, प्लीहा पर लाभप्रद प्रभाव डालता है। परिणामतः नवीन रक्त की उत्पत्ति होती है। कई तत्वों का प्रजनन अंगों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। गर्भाशय तथा गुर्दों पर शक्तिशाली टानिक का काम करता है, जिससे उनकी दुर्बलता नष्ट होती है और तज्जन्य रोग नष्ट होते हैं।

आयुर्वेद मतानुसार जामुन के गुण धर्म

जामुन मल को बाँधती है, रुक्ष है। कफ, पित्त, घाव, रक्त को जीतती है।

राज जामुन स्वादिष्ट होता है, विष्टम्भ (अफारा) करता है, भारी है और रुचि उत्पन्न करता है। छोटी जामुन का फल भी ऐसा ही है, विशेष कर दाह को नष्ट करता है।

चरक संहिता के मतानुसार—जामुन विशेष रूप से कषाय, मधुर, गुरु (भारी), विष्टम्भी, शीतल, कफपित्तनाशक, ग्राही (मल बंधक) तथा अत्यन्त

वायुकारक है तथा वायु उत्पन्न करने वाले पदार्थों में जामुन सर्वोपरि है।

इन गुण-दोषों के अतिरिक्त जामुन यकृत, प्लीहा विकार नाशक और नया रक्त उत्पन्न करने वाला है।

जामुन की मज्जा (गुठली)—जामुन की गुठली कषाय, मधुर, शीतल, धातु अवरोधक, मधुमेह व प्रदर रोग में अमृततुल्य औषधि है। आधुनिक वैज्ञानिक अन्वेषण से भी सिद्ध हो चुका है कि मधुमेह में अन्य उत्तेजक औषधियों का प्रयोग असफल होने पर जामुन के योग शतप्रतिशत लाभप्रद होते हैं। इंस्युलीन तथा ट्राइप्सोजन औषधियों द्वारा लाभ न होने पर जामुन की गुठली की गिरी से व्याधि-मुक्त होने के अनेक उदाहरण हैं।

महर्षि चरक ने भी जम्बूफल को महाव्याधियों में सेवन करने का निर्देश किया है।

मधुमेह में मूत्रशर्करा आने पर इसका प्रयोग किया जाता रहा है। प्रदर रोग में भी यह अत्यन्त लाभकारी है। स्त्रियों के लिए प्रदर (ल्युकोरिया) कठिन व्याधि है। प्रदर से सभी धातुओं का क्षय होता है। मूत्रमार्ग से प्रायः चिकना श्वेत, लाल, पीला स्राव, आर्द्रता आदि लक्षण होते हैं, जिससे

स्त्रियों की कटि, कूल्हों, जंघाओं में पीड़ा और शरीर में दुर्बलता हो जाती है। कुछ दिनों में शरीर पीला हो जाता है, हथेली और पैर के तलुओं में जलन होती है। रोगिणी का स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार सोमरोग हो जाने पर मूत्र की मात्रा बढ़ जाती है और स्त्री का शरीर क्षीण हो जाता है। इन व्याधियों में जामुन की गुठली के प्रयोग बहुत ही गुणकारी सिद्ध हो चुके हैं।

जामुन की गुठली मधुर, शीतल, धातु अवरोधक, जीर्णातिसार, प्रवाहिका, रक्तातिसार रक्तप्रदर, इक्षुमेह, उदकमेह, मधुमेह आदि में उत्तम लाभकारी है।

छाल—जामुन के वृक्ष की छाल कषाय, मधुर, स्तम्भक, मलरोधक, पाचक, रुक्ष, रुचिकारक तथा पित्तशामक है। इसकी छाल में टेनिन १२ प्रतिशत और गोंद १ प्रतिशत होता है। इसका क्वाथ जीर्णातिसार, प्रवाहिका (पेचिश), संग्रहणी आदि पर लाभप्रद है।

जामुन के पत्ते—कसैले, संकोचक, ग्राही, कफपित्तनाशक और वमनशामक हैं। कोमल पत्र-स्वरस वमन व रक्तपित्त में लाभप्रद हैं। पुटपाक विधि से

पत्र-स्वरस उत्तम रूप से निकाला जा सकता है। पत्तों के कल्क का प्रलेप दूषित व्रणों का शोधक है।

सार—संक्षिप्त रूप में जामुन के फल लघु, रुक्ष, कषाय, अम्ल, मधुर-विपाक, शीतवीर्य कफपित्तशामक और प्रबल वातवर्द्धक होते हैं। ये रक्तस्तम्भक, त्वग्दोषहर, दाह-प्रशामक, दीपन, पाचन, यकृदुत्तेजक, मलरोधक, श्रमहर, तृषाशामक, अतिसार, श्वास, कास, उदरकृमि आदि नाशक है।

जामुन-फल खाने का नियम—जामुन के फलों को भोजन के पश्चात् तीसरे पहर खाना ठीक रहता है। भोजन के पूर्व या खाली पेट जामुन खाने से वात की वृद्धि तथा आध्मान हो जाता है, जैसा कि चरक ने लिखा है। यों भी गाँवों में रहने वाले लोगों का अनुभव है कि जब खाली पेट पेटभर जामुन खा लिया जाता है, तो पेट में गुड़गुड़ शब्द होने लगता और अफारा हो जाता है। वातकारक होने के कारण ही विष्टम्भी भी है। अतः भोजन के पश्चात् नमक (यथासम्भव सेंधा नमक), धनिया और कालीमिर्च के चूर्ण के साथ इसे थोड़ा सा खाना चाहिए। इस प्रकार खाने से इसका वातवर्द्धक दोष कम हो जाता है। यदि जामुन को सवेरे खाना हो तो पहले कुछ

पके हुए अच्छे आम खा लेना चाहिए। आम खा लेने के बाद १०-१५ जामुन खा लेने से जामुन से अफारा नहीं होता और आम भी अच्छी तरह पच जाते हैं। बासी, सड़ा-गला और कच्चा फल हानिकर होता है। कच्चे या अधपके फल खाने से आँतें छिल जाती हैं और फेफड़ों में विकार होने की सम्भावना रहती है। जामुन खाने के बाद दूध नहीं पीना चाहिए। जामुन के साथ दूध संयोग-विरुद्ध है। आम के अजीर्ण में जामुन खाना गुणकारी है। दुर्बल पाचनशक्ति वालों को जामुन खाने के बजाय जामुन का रस निकालकर पीना अधिक उपयुक्त और हितकर है। परिमित मात्रा में जामुन खाने से दुर्बल पाचन शक्ति सबल हो जाती है। ध्यान रहे कि जामुन में शरीर पोषक सभी आवश्यक तत्व नहीं होते। अतः कल्पविधि से जामुन का सेवन करना हो तो जामुन खाने से पूर्व अच्छे मीठे पतले रस वाले आमों को चूस कर उसके पश्चात् जामुन खाना चाहिए। तत्पश्चात् दो-तीन घण्टे बाद दूध पीना चाहिए।

जामुन अनेक रोगों पर उत्तम प्रभावकारी है। किन्तु इसका पका फल ही थोड़ी मात्रा में सेवनीय

है, अधिक खाना हानिप्रद है, क्योंकि यह देर से पचने वाला, आध्मानकारक, वातवर्द्धक, कफकारक तथा सीने, फेफड़े और मेदे को खराब करता है। अधपके और बासी फल सर्वथा त्याज्य हैं।

प्रयोज्य अंग—जामुन के फल, गुठली, पत्र, छाल, जड़ सभी औषधि गुण विशिष्ट हैं।

मात्रा—पत्र-स्वरस १ से २½ तोला तक। चूर्ण—१ से ३ माशा। गुठली-चूर्ण ४ रत्ती से २० रत्ती तक। छाल-क्वाथ—१ से २½ तोला तक। छाल की भस्म—१० से १५ रत्ती तक।

जामुन के कुछ विशिष्ट योग

१. जामुन का सिरका या जम्बुद्राव

(१) सिरका बनाने के लिए अच्छे पके हुए ताजे जामुन के फलों का ही रस लेना चाहिए। सिरका बनाने के लिए छोटे जामुन फलों का रस (छोटी जामुन न मिलें तो बड़ी जामुन का रस) ५ सेर लेकर उसमें पाँचों नमक ५-५ तोला महीन पीसकर मिला दें। नमक घुल जाने पर जामुन का रस बोतलों में भरकर उसमें कार्क या ढक्कन खूब कसकर बन्द कर दें। बोतलों को थोड़ा खाली ही रखें, ऊपर तक न

भरें। फिर उन्हें धूप में रखें। इस प्रकार एक ही स्थान पर रखी रहने से बोतलों की तलेटी में गाद सी जम जायगी। स्वच्छ सिरका जो ऊपर रहेगा, उसे धीरे-धीरे दूसरी बोतलों में रख लें और गाद को बाहर फेंक दें। यह सिरका २ तोले तक की मात्रा में समभाग जल मिला कर सेवन करने से उदरशूल तथा घी या वनस्पति घी डालडा इत्यादि से बने पक्वानों के खाने से होने वाला अजीर्ण तथा अफारा, मन्दाग्नि, प्लीहा, यकृत एवं उदर विकारों में लाभ होता है। बड़े हुए रोगों में चार-चार घण्टे के अन्तर से तथा साधारण रोगों में प्रातः सायं सेवन करें। यह सिरका अजीर्ण पर बहुत गुणकारी है।

यह सिरका जिसमें पाँचों नमकों का मिश्रण है, वास्तव में जम्बुद्राव ही है। अथवा कपड़े से छने हुए जामुन फलों के रस में केवल $\frac{1}{4}$ भाग सेंधा नमक मिलाकर एक सप्ताह धूप में रखने से भी साधारण जम्बुद्राव तैयार हो जाता है। यह भी प्लीहोदर, यकृत वृद्धि, कामला आदि पर अच्छा काम देता है। द्राव का प्रयोग प्रायः प्रतिदिन नहीं किया जाता। एक-एक दिन के अन्तर से प्रातः सायं लेना ठीक होता है। रोगी को तेल, लाल मिर्च, गुड़, दही तथा अधिक

घी, शक्कर तथा वनस्पति घी भी नहीं खाना चाहिए।

(२) उत्तम पके ताजे जामुन के फलों के रस को अमृतबान या बोतलों में भर दें। इसे तीन-चार दिन नित्य प्रातः छानकर फिर भर दें। फिर सप्ताह में दो बार छानें। फिर ७ दिन बाद छानें। पश्चात् १५ दिन बाद छान लें। बस सिरका तैयार है। यदि इसे और भी उत्तम बनाना हो तो इसे एक महीना और पड़ा रहने दें। इस पर फफूँद आ गई हो तो छान लें। यह सिरका पुराना हो जाने पर अधिक प्रभावशाली और गुणकारी हो जाता है। छानते समय बोतल या जो पात्र हो, वह सूखा और स्वच्छ हो तथा कपड़ा भी सूत का और साफ हो, गीला न हो, अन्यथा सिरका विकृत हो जाने की सम्भावना रहती है। यह सादा सिरका दाहयुक्त ज्वर, शिरशूल आदि में विशेष लाभकारी है। अपचन, अहितकर एवं दूषित अन्नपानादि से उत्पन्न विसूचिका, उदरशूल, आध्मान, दूषित खट्टी-मीठी डकारें आना आदि विकारों में यह सिरका ४० माशा (१ ड्राम) की मात्रा में लेकर थोड़ा जल मिलाकर एक-एक या दो-दो घण्टे में देने से लाभ होता है। किन्तु कण्ठ में

दाह हो तथा खट्टे जल की वमन हो तो सिरका नहीं देना चाहिए। पेट में बाल चला गया हो या अति उग्र पीड़ा हो तो ३ से ७ माशे की मात्रा में समभाग जल मिलाकर पीने से तुरन्त शांति मिलती है।

२. जम्ब्वारिष्ट

जामुन की अंतर-छाल, हरे पत्ते, फूल और गुठली १-१ सेर कूटकर ६४ सेर जल में पकावें। ८ सेर जल शेष रहने पर ठंडा कर छान लें। फिर उसमें जामुन के फलों का रस १ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण ३ सेर, नागकेशर चूर्ण १ पाव और शहद १० तोला मिलाकर चीनी मिट्टी के अमृतबान में भर मुख बन्द कर एक महीने तक पड़ा रहने दें। फिर छानकर निथार कर बोतलों में भर लें। यह अरिष्ट जितना ही पुराना होगा, उतना ही गुणकारी होगा। मात्रा १ से ४ तोला तक दुगुने जल में मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से प्रमेह, मधुमेह, रक्तार्श (खूनी बवासीर), रक्तातिसार, मूत्रदाह, उदररोग, संग्रहणी एवं पित्तविकार दूर होते हैं।

३. जामुन का शर्बत

अच्छे मीठे पके बड़ी जामुन के फलों का रस एक सेर में २½ शक्कर सेर मिलाकर पकावें। शर्बत

जैसी चाशनी बनाकर छान कर बोतलों में रख लें। १ से २½ तोले तक जल, दूध, मलाई, मक्खन आदि यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से पित्तातिसार, रक्तज संग्रहणी, वमन, जी मिचलाना, गलशोथ, रक्तप्रदर, प्रमेह, सुजाक, रक्तार्श आदि में उत्तम लाभ होता है। यह शर्बत सगर्भा स्त्री को भी दिया जा सकता है।

४. जम्बु अवलेह

अवलेह बनाना हो तो जामुन के फलों के रस से चौगुनी मिश्री मिलाकर शहद जैसा गाढ़ा पाक करें। यह जितना ही पुराना होता है, उतना ही अधिक गुणकारी होता है। इसका भी उपयोग उपरोक्त शर्बत की विधि से किया जाता है। यह अवलेह संग्रहणी आदि रोगों के अतिरिक्त आंत्रक्षयादि व्याधियों में विशेष लाभ करता है।

५. जम्बवाद्यासव

जामुन की छाल ५ सेर, बबूल और खैर की छाल २½-२½ सेर—सबको जौकुट कर १ मन १२ सेर पानी में पकावें। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, एक स्वच्छ मटके में छान कर भर दें। ठण्डा हो

जाने पर उसमें शहद १ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक, लोध, त्रिकुटा प्रत्येक ४-४ तोला का चूर्ण मिलावें। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर एक महीने तक सन्धान करने के लिए सुरक्षित रखने के बाद छानकर बोतलों में भर लें। १ से ४ तोले तक की मात्रा में इस आसव का सेवन करने से बहुमूत्र, प्रमेह और स्त्रियों का सोमरोग आदि दूर हो जाते हैं।

६. जम्बुमज्जादि चूर्ण

जामुन की गुठली की गिरी, आम की गुठली की गिरी, लाल चन्दन, जटामांसी, लोध, खस, कमल केशर, नागकेशर, बेलगिरी, नागर मोथा, हाऊबेर, सोना पाठा, कुड़े की छाल, कमल, सोंठ, अतीस, धाय के फूल, रसौत, मोचरस, नील कमल, मजीठ, इलायची, अनार का छिलका और मिश्री इन २४ दवाओं को समान भाग लेकर कूट-पीस कर कपड़-छन चूर्ण बनाकर रख लें। ३-४ मासे की मात्रा में यह चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से और ऊपर से चावलों का पानी पीने से रक्तपित्त, खूनी बवासीर, ज्वर, मूर्छा, मद, प्यास, अतिसार, वमन, मासिक धर्म की रुकावट आदि रोग दूर होते हैं। इस चूर्ण का

प्रयोग करने से गिरता हुआ गर्भ भी ठहर जाता है। सुपरीक्षित उत्तम गुणकारी योग है।

७. मधुमेह (Diabetes)

मधुमेह में अन्य औषधियों के प्रयोग निष्फल होने पर जामुन के प्रयोग शत प्रतिशत गुणकारी सिद्ध हो चुके हैं। यहाँ पर कुछ परीक्षित और गुणकारी योग दिये जा रहे हैं।

(१) मधुमेह में ताजे जामुन फलों का या उनके रस का सेवन करना बहुत हितकारी है। जामुन न मिलें तो जामुन के सूखे फलों का चूर्ण २ तोला सेवन करना भी मधुमेह में बहुत लाभकारी है।

(२) जामुन की अंतर छाल छाया में सुखाकर कूट-पीस छानकर ६-६ मासे की मात्रा में प्रातः सायं जल के साथ लेने से मधुमेह में पर्याप्त लाभ होता है।

(३) जामुन की गुठलियों का चूर्ण ६-६ मासे की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से मूत्र में शर्करा जाना बिल्कुल कम हो जाता है। औषधि सेवन काल में चावल, चीनी, आलू न खायें।

(४) जामुन के १० हरे नरम पत्ते सिल पर महीन पीस कर प्रातःकाल ताजे जल के साथ १५-

२० दिन पीने से पेशाब से शक्कर जाना बन्द हो जाता है।

(५) काले जामुनों की मींगी का चूर्ण १ माशे मधु के साथ सेवन करने से मूत्र के साथ शर्करा जाना कम हो जाता है और मूत्र का परिमाण भी कम होता है। यदि इसमें १ रत्ती मकरध्वज भी मिला लिया जाय तो और गुणकारी है।

(६) २५ तोला उबलते हुए पानी में अच्छे पके हुए जामुन २½ से ५ तोला तक डाल कर जल को नीचे उतार कर पात्र को ढक दें। आध घण्टे बाद मसल कर छान लें। इसके तीन भाग कर दिन में तीन बार पीने से मधुमेह में शीघ्र लाभ होता है।

(७) लौह भस्म में जामुन के फलों के रस की ५-७ पुट देने से उत्तम नील वर्ण की भस्म तैयार होती है। २-३ रत्ती की मात्रा में यह भस्म शहद के साथ सेवन करने से मधुमेह में उत्तम लाभ होता है।

(८) पुराने जामुन वृक्ष की अंतरछाल छाया में सुखा कर जला लें। भस्म का रंग सफेदी लिए भूरे रंग का हो जाने पर भली-भाँति खरल करें। इस भस्म को प्रातः काल निराहार ताजे जल के साथ और दोनों समय भोजन के एक घण्टे बाद कुछ

समय तक निरन्तर नियमित रूप से सेवन करने से मधुमेह में मूत्र के साथ चीनी जाना बन्द हो जाता है।

(९) जामुन की गुठली की गिरी, सोंठ, गुडमार बूटी तीनों समभाग ले कपड़छन चूर्ण कर, चूर्ण को घीकुवाँर के ताजे रस की तीन भावना देकर झड़बेरी बराबर गोली बना लें। नित्य नियमित रूप से दिन में तीन बार एक एक गोली मधु के साथ सेवन करने से मूत्र में शर्करा जाना बन्द हो जाता है। मधुमेह जन्य फुंसियाँ, फोड़े, कारबंकल आदि भी इसके प्रयोग से आराम होते हैं।

(१०) जामुन की गुठलियों को छाया में सुखा कर रख लें। फिर इनको कूटकर महीन चूर्ण बना कर रख लें। गुडमार बूटी ३ माशे एक पाव पानी में पकायें। ५ तोला पानी शेष रह जाने पर छान कर शीशी में रख लें। प्रातःकाल गुठलियों का चूर्ण ३ माशा फाँककर ऊपर से गुडमार का क्वाथ १½ तोला पियें। दोपहर को फिर ६ माशा चूर्ण फाँक कर ऊपर से शेष बचा हुआ क्वाथ पी लें। इस प्रकार महीने, डेढ़ महीने तक प्रतिदिन इसका सेवन करने से कष्ट साध्य प्रमेह और मधुमेह अच्छा हो जाता है।

पूर्वोक्त पथ्य-परहेज का पालन करें। दूध मक्खन निकाला हुआ बिना शक्कर का लें। गेहूँ की रोटी खाना हो तो चोकर युक्त आटे की खायें। आमला, नींबू, जामुन, कसेरू, गर्म करके शीतल किया हुआ जल, घोड़े की सवारी, पैदल घूमना-टहलना पथ्य है।

(११) जामुन की अंतर छाल सुखाकर इस प्रकार जला लें कि श्वेत भूरे रंग की भस्म हो जाय। इसे खरल में घोट छान कर बोतल-शीशी में रख लें। जिस रोगी के मूत्र की ग्रेविटी १.२० से १.३० तक हो, उसे यह भस्म १० रत्ती की मात्रा में एक औंस जल के साथ प्रातः खाली पेट तथा दोपहर और शाम को भोजन के एक घण्टे बाद उसी प्रकार १०-१० रत्ती की मात्रा में दें।

ध्यान रहे—आरम्भ में रोगी के मूत्र की स्पेसिफिक ग्रेविटी १.२० से १.३० या १.३५ तक बढ़ती है। एक औंस मूत्र में शक्कर ५ से १० रत्ती तक जाती है। ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता है, त्यों-त्यों ग्रेविटी बढ़कर १.५० तक चली जाती है तथा मूत्र में २५ रत्ती तक शर्करा के तत्व जाने लगते हैं। शक्कर के साथ अलव्यूमिन एवं अन्य कई जीवन-पोषक तत्व

पेशाब के साथ जाने लगते हैं। औषधि का प्रयोग आरम्भ करने पर प्रति तीसरे या चौथे दिन पेशाब की ग्रेविटी एवं शक्कर की जाँच कराते रहें। साथ ही पथ्यापथ्य का अवश्य पालन करें। यह बात पूर्ण विश्वास के साथ कही जा सकती है कि पथ्य-पूर्वक इसका प्रयोग करने से अधिकांश रोगियों का रोग डेढ़ महीने में चला जाता है। यदि रोगी के पेशाब की स्पेसिफिक ग्रेविटी १.३४ से १.५० तक हो तो इस भस्म की मात्रा २० से ३० ग्रेन दिन में तीन बार दें तथा रोगी की प्रकृति का विचार कर यदि कोई उपद्रव मालूम हो तो इसी भस्म के साथ अन्य सहायक औषधियाँ—चन्द्रप्रभा वटी, गिलोय सत्व, संशयनी वटी या प्रवाल भस्म आदि दी जा सकती है।

(१२) जामुन की गुठली २ तोला, बहेड़े का बक्कल २ तोला, हल्दी १ तोला, गुडमार २½ तोला—सबको कूट-पीस छानकर चूर्ण बनाकर ३-३ मासे चूर्ण प्रातः सायं ताजे जल के साथ लेने से मूत्र के साथ शर्करा आना बन्द होता है।

(१३) जामुन के पत्ते, बबूल के पत्ते, नीम की पत्तियाँ, बेल के पत्ते ५-५ ग्राम और गुड़हल के फूल २ ग्राम—इन सबको सिल में घोट पीस कर १००

ग्राम पानी में घोलकर छान लें। अगर बहुत महीन पिसा हो तो छानना आवश्यक नहीं है। दिन में एक बार भोजन के पश्चात् कुछ दिनों तक सेवन करने से मधुमेह समूल नष्ट हो जाता है। इसका निरन्तर कई माह तक प्रयोग करना चाहिए। औषधि सेवन काल में मीठे तथा जले-भुने पदार्थ न खायें। औषधि सेवन के समय गुठली सहित जामुन के फल और करेले का साक, जो भी मिले अवश्य खायें।

८. बहुमूत्र

बहुमूत्र रोग में रात-दिन में लगभग ८-१० किलो सामान्य पीले रंग का मूत्र होना, मूत्र का आपेक्षिक गुरुत्व १००० से १००५ होने से इस रोग को सहज ही जाना जा सकता है। रोग बढ़ने पर शरीर की मांस-पेशियाँ घुलने लग जाती हैं और रोगी निरन्तर दुर्बल होता जाता है।

(१) जामुन की गुठली की गिरी और बहेड़े का छिलका समान भाग लेकर कूट-पीस छान लें। सुबह-शाम ४-४ माशे की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से बार-बार पेशाब आने की व्याधि मिट जाती है।

(२) जामुन की गुठली की गिरी और काले

तिल समान भाग ले चूर्ण कर प्रातः सायं १-१ तोला चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से बहुमूत्र रोग अवश्य अच्छा हो जाता है।

९. अतिसार

बार-बार पतले दस्त होने को अतिसार कहते हैं।

(१) जामुन की गुठली की गिरी, आम की गुठली की गिरी तथा घी में भुनी हुई पीली हरड़ सब वस्तुयें समान भाग लेकर पीस छान लें। १-१½ तोला की मात्रा में प्रातः सायं जल के साथ सेवन करने से सब प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(२) जामुन के पत्ते, अनार के पत्ते, जल चौलाई, सिंघाड़े के पत्ते, सुगन्धबाला, नागर मोथा और सोंठ—इन सबका काढ़ा बनाकर पीने से गंगा की धारा के समान बहते हुए अतिसार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

१०. आमातिसार

दस्तों के साथ आँव आना आमातिसार कहा जाता है। आँव के दस्तों को आरम्भ में बन्द करने के लिए कोई ग्राही औषधि न देना चाहिए। आँव के दस्त आरम्भ होते ही २½ तोला शुद्ध रेंड़ी का तेल पाव

आधा पाव गरम दूध या त्रिफला के क्वाथ में मिला कर देना चाहिए, जिससे दस्त के साथ आँव निकल जाय। आँव के दस्त बन्द हो जाने पर कुछ दिनों तक आँव नाशक दवा खानी चाहिए और खान-पान में विशेष संयम रखना चाहिए।

(१) आम और जामुन की गुठली का चूर्ण समभाग शक्कर मिलाकर ३ से ६ माशे की मात्रा में दिन में ३-४ बार थोड़े जल के साथ लेने से आँव और खून के दस्त बन्द होते हैं। पथ्य में मट्टा और अनार के रस का सेवन करना चाहिए।

(२) १ तोला जामुन-पत्र के स्वरस में ३ माशा मधु मिलाकर (यह एक मात्रा है) दिन में तीन-चार बार देने से आँव का पाचन होता और रक्तातिसार में रक्त आना बन्द होता है।

(३) जामुन की छाल, आम की छाल, बबूल की छाल प्रत्येक आधा-आधा सेर लेकर ४ सेर जल में पकाकर क्वाथ बनायें। १ सेर जल शेष रहने पर छान कर रख लें। दिन में ३ बार यह क्वाथ २-२ तोले की मात्रा में लेकर थोड़ा शीतल जल मिलाकर पीने से आमातिसार, प्रवाहिका और रक्तातिसार में शीघ्र लाभ होता है।

११. रक्तातिसार

दस्तों के साथ रक्त का अंश आने को रक्तातिसार या खूनी पेचिश कहते हैं। रक्तातिसार में आँतों में व्रण हो जाते हैं, जिससे आँव के साथ रक्त आने लगता है।

(१) जामुन की छाल, आम की छाल, बबूल की छाल तीनों आधा-आधा सेर लेकर ४ सेर पानी में पकावें। एक सेर जल शेष रहने पर उतार कर छान कर रख लें। दिन में ४-५ बार यह क्वाथ २-२ तोले की मात्रा में थोड़ा ठण्डा पानी मिलाकर पीने से पेचिश, आमातिसार और रक्तातिसार में शीघ्र लाभ होता है।

(२) जामुन, आम, आमला के नये कोमल पत्ते सिल पर पीसकर एक स्वच्छ मजबूत कपड़े में रखकर ६ माशे रस निकाल लें। इस रस में ६ माशे शहद मिलाकर बकरी के दूध के साथ पी जायें। इससे रक्तातिसार में शीघ्र ही लाभ होता है।

(३) केवल जामुन की छाल पीसकर दूध और शहद के साथ पीने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

(४) जामुन की जड़ की छाल को पीसकर धारोष्ण गोदुध के साथ प्रातः सायं पीने से आमातिसार और रक्तातिसार में शीघ्र लाभ होता है।

(५) जामुन और कुड़ा (कुरैया) की छाल समभाग लेकर जौकुट कर चौगुने पानी में पकायें। चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर पुनः पकावें और गाढ़ा कर लें। जब अवलेह जैसा गाढ़ा हो जाय और करछुल से चिपकने लगे तो उतार कर शीतल करके सुरक्षित रख लें। इसे ६ मासे से १ तोले की मात्रा में शहद के साथ चाटने से भयंकर अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार तथा राधयुक्त मुरदे की सी गन्धवाला अतिसार शीघ्र ही समूल नष्ट हो जाता है। (हारीत संहिता)।

(६) जामुन की गुठली पीसकर चूर्ण कर लें। प्रातः सायं १-१ तोला की मात्रा में एक छटाँक जल में मिलाकर पीने से खूनी दस्त बन्द होते हैं। पथ्य में भुना जीरा, भुनी हींग तथा काला नमक डाला हुआ मट्ठा (यथासम्भव गाय का मट्ठा और दही), पुराने चावल तथा मूँग की खूब गली हुई खिचड़ी खायें।

(७) १-२ तोला जामुन के हरे पत्ते पीसकर आध पाव पानी में घोलकर छानकर दिन में ३-४ बार ४-५ दिन पीने से दस्त के साथ रक्त आना बन्द होता है।

१२. संग्रहणी

जब अतिसार कुपथ्य या उचित उपचार न करने पर जीर्ण होकर ४० दिन से अधिक पुराना हो जाता है, तो उसे संग्रहणी कहा जाता है। संग्रहणी महामन्दाग्नि का चरम विकृत रूप है। संग्रहणी में किया हुआ भोजन अच्छी तरह नहीं पचता और दस्त होते रहते हैं। संग्रहणी का प्रमुख लक्षण यह है कि इसमें दस्त अधिक परिमाण में आता है। मल में आँव का अंश अवश्य रहता है। मल का वेग इतना प्रबल होता है कि यदि शौच के लिए कुछ दूर जाना हो तो दस्त धोती में ही हो जाता है। दस्त के समय पेट में मरोड़ उठती है। संग्रहणी बहुत ही कष्टप्रद और कष्टसाध्य रोग है। संग्रहणी में मट्ठा और बेल का शर्बत उत्तम पथ्य है।

(१) आम्रादि यवागू—आम, जामुन इन तीनों की ४ पाव छाल को जौकुट कर ६४ गुने पानी में औटावें। आधा जल शेष रहने पर छानकर उस क्वाथ में १६ तोला चावल डालकर फिर पकावें। जब पकते-पकते गाढ़ा हो जाय तो उतार लें। इसे आम्रादि यवागू कहते हैं। इसके सेवन से संग्रहणी रोग दूर होता है।

(२) जामुन के पेड़ की अंतर छाल लेकर छाया में सुखा लें और कूट-पीस छान कर रख लें। इसे ४ से ६ मासे की मात्रा में मट्ठा या दही की लस्सी के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से संग्रहणी ठीक होती है।

१३. अतिसार और संग्रहणी

जामुन पत्र, अनार पत्र, सिंघाड़ा के पत्ते, पाठा और चौलाई की पत्तियाँ समान भाग लें कूट कर पका लें और छानकर एक पात्र में रखकर उसमें बेलगिरी भिगोकर ढककर रात को रख दें। प्रातः काल इसमें थोड़ा गुड़ और सोंठ का चूर्ण मिलाकर पीने से समस्त प्रकार के प्रबल अतिसार और कष्ट-साध्य भयंकर संग्रहणी में आशातीत लाभ होता है। (बंगसेन)

१४. अतिसार-संग्रहणी, ज्वर, रक्तपित्तादि

अरलू गुटिका—जामुन की छाल, अरलू की छाल, आम की छाल, कैथ, हल्दी, बेलगिरी, कायफल, लाख, रसौत, मोचरस, नेत्रबाला, हाऊबेर, बट के अंकुर, सोंठ, लोध, धाय के फूल—सबका चूर्ण कर चावल के धोवन के पानी में खरल कर १-१ तोला की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। नित्य प्रातः

सायं साठी चावल के धोवन के साथ १-१ गोली खाने से अतिसार, संग्रहणी, ज्वर, रक्तपित्त तथा उदर शूल में शीघ्र ही अच्छा लाभ होता है।

१५. काँच निकलना

अतिसार में बहुत दस्त होने पर प्रायः काँच निकलने की व्याधि हो जाती है। देखने में आता है कि बालकों को अतिसार होने पर यह रोग बहुधा हो जाता है। दुर्बल बालकों को यह रोग अधिक होता है।

जामुन तथा आम के पत्ते तथा दोनों की छाल को जौकट कर काढ़ा बनाकर उस काढ़े से गुदा धोने तथा इसी काढ़े में नित्य कुछ देर गुदा रखकर बैठने से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

१६. छर्दि (वमन)

खाये-पिये पदार्थ बलात् मुख से बाहर निकल पड़ने के रोग को छर्दि, वमन, कै या उल्टी होना कहते हैं। कै आना स्वयं कोई रोग नहीं है, बल्कि दूसरे रोग का लक्षण है।

(१) जामुन, आम, बिजौरा के ताजे हरे पत्तों और जड़ को तत्काल कूट कर गोला बनाकर कपड़-मिट्टी कर पुटपाक रीति से पकाकर उसका रस शहद

मिलाकर पीने से सर्वदोषजन्य कठिन छर्दि का रोग दूर होता है।

(२) जामुन और आम के कोमल पत्ते पानी में औटाकर क्वाथ बनाकर शहद डालकर पीने से भयंकर छर्दि बन्द हो जाती है।

(३) जामुन की गुठली की गिरी और बेर की गुठली की गिरी पीसकर शहद के साथ चाटने से कफज वमन बन्द होता है।

(४) जामुन के रस में मुलहठी का चूर्ण मिलाकर चाटने से कफ का वमन आराम होता है।

(५) जामुन और आम के पत्ते आध सेर पानी में औटाकर क्वाथ बनावें। आध पाव जल शेष रहने पर धान की खीलों का चूर्ण मिलाकर शहद डालकर पीने से भयंकर से भयंकर वमन-व्याधि शान्त होती है।

(६) जामुन की छाल की राख मधु में मिलाकर चाटने से कै होना बन्द हो जाता है।

(७) जामुन के पत्ते, आम के पत्ते, खस, बरगद और पीपल के अंकुरों का क्वाथ बनाकर ठंडा कर शहद मिलाकर पीने से हर प्रकार के वमन में शीघ्र लाभ होता है।

१७. वमन और अतिसार

आम और जामुन के पत्तों का क्वाथ बना कर उसमें धान की खीलों का चूर्ण मधु डालकर पीने से कै और दस्त एक साथ होने की व्याधि दूर होती तथा घोर तृषा शांत होती है।

१८. वमन में रक्त आना

यदि वमन में रक्त आता हो तो जामुन के फलों के रस का शर्बत पिलाने से लाभ होता है।

१९. तृषा (प्यास)

बारम्बार पानी पीने पर भी प्यास शान्त न होने की व्याधि को तृषा रोग कहते हैं।

(१) जामुन के पत्ते और आम के पत्ते अथवा जामुन और आम की छाल अथवा जामुन और आम के फलों की मींगी लेकर जल में पकाओ। आधा पानी रह जाने पर मल कर छान लो। फिर इसमें शहद मिलाकर पियो। इस काढ़े से प्यास और वमन के रोग निश्चय ही शान्त होते हैं।

(२) जामुन के पत्ते और आम के पत्ते पीसकर तालू पर लेप करने से प्यास मिट जाती है।

(३) जामुन की कोपलें, आम की कोपलें, धान की खील, चन्दन और धाय के फूल सब सम भाग ले

पीस लो और चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को अडूसा के पत्तों के रस में चाटने से कफज प्यास, दाह और मूर्छा आदि नष्ट होते हैं।

२०. तृषा और दाह

जामुन तथा आम के कोमल पत्ते, बरगद की जटा, नील कमल, खस, सफेद चन्दन सब वस्तुयें समान भाग लेकर कूट-पीस कपड़छन चूर्ण कर शहद में मिलाकर चने बराबर गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली लगातार मुख में पड़ी रखकर उसका रस चूसते रहें। इससे ज्वरादि की दशा में अधिक लगने वाली प्यास, मुख का सूखना और दाह में बहुत लाभ होता है।

२१. ज्वर, तृषा, वमन

(१) आम और जामुन के कोमल पत्ते और बट की कली के भीतर के पत्ते तथा कोमल पत्ते और नेत्रवाला सब मिलाकर ४ तोला लेकर १६ तोले पानी में पकावें। जब जल उबलने लगे, तब उक्त कुटी हुई औषधि ४ तोला डाल दें और एक उफान पका कर उतारकर छान लें। इस फांट के पीने से ज्वर, प्यास, वमन, अतिसार तथा कष्टसाध्य मूर्छा रोग दूर होते हैं।

(२) जामुन तथा आम की कोपलें, कमल और

खस सबको रात्रि के समय मिट्टी के नये पात्र में पाव भर पानी डालकर खुले आकाश के नीचे रख दें। प्रातः काल भली-भाँति मल छानकर ६ माशा शहद मिलाकर पीने से वमन, प्यास, ज्वर और अतिसार में यथेष्ट लाभ होता है।

२२. कफ विकार तथा वमन

जामुन की गुठलियों का चूर्ण शहद में मिला कर चाटने से कफ निकलता और वमन बन्द होता है।

२३. पित्त विकार और वमन

जामुन के कोमल पत्तों का स्वरस पीने से पित्त-विकार दूर होता और वमन होना बन्द होता है।

२४. पित्त प्रकोप

१ तोला जामुन के रस में १ तोला गुड़ मिला कर आग पर रखें। जब उसमें से भाप निकलने लगे तो उसे मुख में रखने से पित्त शान्त होता है।

२५. कफ ज्वर तथा वातज्वर

जामुन की गुठलियों को साफ करके सुखा लें। फिर इन गुठलियों को कड़ाही में डाल चूल्हे पर चढ़ाकर राख करके चूर्ण बना कर रख लें। ३ माशा चूर्ण शहद के साथ प्रातः सायं सेवन करने से कफ,

ज्वर और वातज्वर दोनों में समान रूप से उत्तम लाभ होता है।

२६. मंथर ज्वर (मोतीझला)

जामुन के कोमल पत्ते, कालीमिर्च और गुलदाउदी के फूल (फूल न मिलें तो पत्ती) तीनों समभाग पीस छानकर थोड़े जल के साथ पिलाने से मंथर ज्वर के—रोगी की बेचैनी दूर होती और शांति मिलती है।

२७. जुकाम होते रहने पर

कुछ लोगों को प्रायः जुकाम बना रहता है। ऐसे लोगों के लिए निम्नांकित प्रयोग बहुत लाभदायी सिद्ध होगा।

भाँग की पत्तियाँ थोड़े जल के साथ सिल पर महीन पीस कर गोली बना लें। गोली पर जामुन के पत्ते लपेट कर डोरा बाँध दें। फिर ऊपर से एक अंगुल गीली चिकनी मिट्टी का लेप करके धूप में सुखा लें। सूखने पर उस गोले को जंगली कंडों की आग में पका लें। जब गोला लाल हो जाय तो उसे निकाल लें। फिर उस गोले की मिट्टी-पत्ती हटा कर, भाँग की लुगदी बाहर निकाल कर, एक मजबूत मोटे कपड़े में रखकर उसका रस निचोड़ लें। फिर उस रस में नमक और तिल का तेल मिला कर पी

लें। इस प्रकार एकाध सप्ताह यह प्रयोग करते रहने से जुकाम समूल नष्ट हो जाता है और बार-बार नहीं होता।

२८. श्वास और फुफ्फुस विकार

श्वास रोग हो जाने पर फुफ्फुस (फेफड़े) भी विकार ग्रस्त हो जाते हैं।

(१) छोटी जामुन की जड़ का रस और अदरक का रस १-१ तोला लेकर थोड़े गरम जल में मिला कर पीने से श्वास और फुफ्फुस विकारों में लाभ होता है।

(२) जामुन की जड़ को पीस कर उसका कल्क बनाकर उसे छान कर सोंठ का चूर्ण मिलाकर गरम जल में घोल कर पीने से श्वास और फुफ्फुस विकार दूर होते हैं।

२९. अर्श (बवासीर)

(१) जामुन पकने के समय अच्छे परिपक्व जामुनों का स्वरस नित्य आध पाव पीने से खूनी, बादी दोनों प्रकार की बवासीर में लाभ होता है।

(२) जामुन के कोमल पत्तों का स्वरस २ तोला निकाल कर उसमें थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से खूनी बवासीर में खून गिरना बन्द होता है।

(३) जामुन के कोमल पत्तों को पीस छान कर पाव भर गाय के दूध में थोड़ा शहद मिलाकर पीने से एक सप्ताह में रक्तार्श में लाभ प्रतीत होता है।

(४) जामुन और आम के पत्ते प्रत्येक २ तोले लेकर बिना पानी डाले सिल पर पीस कर कपड़े से छानकर रस निकालें। इस प्रकार रस न निकल सके तो थोड़ा गोदुग्ध मिलाकर पीसकर रस निकाल लें। फिर पाव भर गाय के दूध में उक्त रस तथा थोड़ी शक्कर मिलाकर पी लें। १०-१५ दिन के प्रयोग से रक्तज, वातज दोनों प्रकार की बवासीर में यथेष्ट लाभ होता है।

(५) जामुन, कचनार और मौलसिरी की छाल २-२ तोले लेकर आध सेर पानी में पकाओ। आधा पानी शेष रहने पर उतार कर छान कर रख लो। ठंडा होने पर इस पानी से गुदा धोने से बवासीर के मस्से सूख कर नष्ट हो जाते हैं।

(६) जामुन की गुठली की गिरी, नीम की मींगी और रसौत तीनों समभाग ले चूर्ण बनाकर ३ से ६ माशा चूर्ण प्रातः सायं ताजे जल के साथ लेने से हर प्रकार की बवासीर दूर होती है।

३०. प्लीहा-वृद्धि

मलेरिया ज्वर के पश्चात्, पाण्डु रोग हो जाने पर या अन्य कारणों से प्लीहा वृद्धि हो जाने से पेट का बाँया भाग जहाँ प्लीहा रहती है, बहुत कठोर और बड़ा हो जाता है। प्लीहा वृद्धि हो जाने से पाचन क्रिया बिगड़ जाती है, शरीर पीला और दुर्बल हो जाता है और कुछ दिनों में शरीर में शोथ होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। प्लीहा में जामुन का सिरका बहुत गुणकारी और प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।

शुद्ध आमलासार गन्धक ७ तोला, नौसादर व कलमीशोरा १-१ तोला, हीरा कसीस व कुनैन ३-३ माशा—इन सबको पीसकर एक बोतल में भर कर उसमें ताजे पके अच्छे जामुनों का रस भर कर बोतल का मुख अच्छे मजबूत काग या चूड़ीदार ढक्कन से बन्द करके ४० दिन धूप में रखें। फिर छान कर दूसरी बोतल में भर लें।

प्रातः सायं २० से ४० बूँद यह सिरका २½ तोले जल में मिलाकर सेवन करने से प्लीहा रोग शीघ्र ही अच्छा हो जाता है। औषधि सेवन काल में घी का प्रयोग अधिक मात्रा में करें और तेल,

लाल मिर्च, खटाई, दही, इमली आदि का बिल्कुल परित्याग कर दें।

३१. प्लीहा तथा आमाशय विकार

जामुन के पत्तों को गोदुग्ध में पीसकर पीने से प्लीहा तथा आमाशय के विकारों में लाभ होता है।

३२. जलोदर तथा प्लीहा

नाभि के पास पेट ऊँचा दीखे, उसमें चिकनाहट हो, पेट में जल भरा हो, पैरों में शोथ हो, यह जलोदर के सामान्य लक्षण हैं। जलोदर रोगी का पेट छूने से ऐसा मालूम होता है, मानो जल से भरी हुई मशक हो।

जलोदर महा कष्टप्रद और कष्ट साध्य भयंकर उदर-व्याधि है।

जलोदर रोगी को मूत्र-विरेचन कराने वाली औषधियों जैसे वासाक्षार, पुनर्नवाक्षार, अपामार्ग क्षार, गोखरूक्षार और मूलीक्षार प्रत्येक २ से ४ रत्ती की मात्रा में एक छटाँक जल में मिलाकर ४-६ घंटे के अन्तर से देना चाहिए।

जलोदर रोगी को नमक और जल बिल्कुल न देना चाहिए। जल के स्थान पर ऊँटनी का दूध या भेड़ का दूध अथवा पीपल डालकर पकाया हुआ

गोदुग्ध दें। तेल, घी, लाल मिर्च, खटाई और मिठाई का प्रयोग कदापि न करें।

जामुन के ताजे पके हुए फलों को निचोड़ कर छान कर मिट्टी के पात्र में भर दें। १५ दिन बाद पुनः छान कर बोतलों में भर लें। फिर ४-६ दिन बाद ऊपर का रस निकाल कर नीचे जमी हुई गाद बाहर फेंक दें और नितरा हुआ स्वच्छ लाल-लाल रस रख लें। तत्पश्चात् शुद्ध गन्धक, कलमी शोरा और नौसादर प्रत्येक १-१ तोला—सबका चूर्ण कर एक बोतल में डालकर उपरोक्त जामुन का नितरा हुआ रस या सिरका ५५ तोला डाल दें। आध घण्टे बाद बोतल का मुख बन्द कर ४० दिन तक धूप में रखें। फिर प्रयोग करें। प्रातः सायं १ से ३ मासे तक इस आसव का सेवन करने से जलोदर, प्लीहा व श्वास में बहुत ही लाभ पहुँचता है। यह आसव अत्यन्त पाचक होता है और अजीर्ण, शूल अफारा आदि उदर विकारों को नष्ट करता है।

३३. अम्लपित्त

भोजन के पश्चात् या बिना भोजन किये ही कड़ुवी और खट्टी डकारें, छाती और गले में जलन, भोजन न पचना, जी मिचलाना, शरीर में भारी-

पन, अत्यन्त अरुचि और ग्लानि ये अम्लपित्त के लक्षण हैं।

(१) जामुन की अंतर छाल और आँवले दोनों $2\frac{1}{2}$ - $2\frac{1}{2}$ तोले कुचल कर मिट्टी के एक नये पात्र में भर कर १ सेर पानी डाल कर रात को ओस में रख दें। प्रातःकाल इसमें से पाव-डेढ़ पाव सबेरे, पाव भर दोपहर को भोजन के घण्टे डेढ़ घंटे बाद और पाव डेढ़ पाव शाम को $1\frac{1}{2}$ -२ तोला मिश्री मिलाकर पीने से अम्लपित्त अच्छा हो जाता है।

(२) जामुन की पत्तियाँ २-२ $\frac{1}{2}$ तोला, आँवलों का रस या सूखे आँवले १ तोला, जीरा, धनिया, इलायची, नागरमोथा ३-३ माशे सबको पीस छानकर शहद और मिश्री मिलाकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।

३४. रक्तपित्त

आम्रादि हिम—आम की छाल, जामुन की छाल, कोह (अर्जुन) की छाल—तीनों छालें समान भाग मिलाकर ४ तोले ले जौकुट कर २४ तोले पानी के साथ किसी नये मिट्टी के पात्र में डाल कर रात को ओस में रख दें। प्रातः काल उस जल में शहद मिलाकर पीने से रक्तपित्त दूर होता है।

३५. नकसीर

केवल नाक से रक्त गिरने को नकसीर कहते हैं। नकसीर को नासा रक्तपित्त भी कहते हैं। जो कारण रक्तपित्त के हैं, वही नासा रक्तपित्त के भी है।

जामुन के कोमल पत्ते और दूब दोनों को पीस कर उनका रस निकाल कर नाक में टपकाने और इन्हीं चीजों को सिल पर पीस कर पाव भर पानी में घोलकर शक्कर मिलाकर पीने से नकसीर बन्द होती है।

३६. शीतपित्त या पित्ती उच्छलना

इसमें शरीर में स्थान-स्थान पर लाल-लाल चकत्ते या ददौरे होकर फूल उठते हैं और इन ददौरों में जोर की खुजली होती है। चकत्तों के साथ-साथ कान, चेहरे तथा माथे पर सूजन भी आ जाती है। कभी-कभी चकत्तों के साथ ज्वर और वमन आदि नाना प्रकार के उपसर्ग भी हुआ करते हैं।

कब्ज और अजीर्ण दूर करना तथा वमन कराना शीतपित्त में बहुत हितकर है। तामसिक आहार न देकर सात्विक आहार देना चाहिए। भूख से कुछ कम गेहूँ की रोटी, खड़ी मूँग की दाल, हरी तरकारियाँ और ताजे फल इस रोग में पथ्य हैं।

इस रोग में गेरू खाना और गेरू लगाना बहुत हितकर है।

(१) जामुन की अंतर छाल पीसकर उसका महीन चूर्ण बनाकर दूध में मिलाकर पिलाकर वमन करा देने से दोषों की शांति होकर शीतपित्त दूर होता है।

(२) डेढ़ दो तोले जामुन के कोमल पत्ते सिल पर महीन पीसकर आध पाव पानी में घोलकर ६ माशा गेरू मिलाकर छान कर १ तोला शहद डालकर पिलाने से रक्तपित्त के विकार दूर होते हैं।

३७. गण्डमाला

मेह और कफ के विकार से गले और गर्दन में जो बेर या आँवले के समान गाँठें पड़ जाती हैं उन्हें गण्डमाला, गलगण्ड या कण्ठमाला कहते हैं। आधुनिक मतानुसार कण्ठमाला भी एक प्रकार का क्षय रोग है। यह रोग बहुत ही कष्टप्रद और कष्ट साध्य होता है। कभी-कभी ये गाँठें पक जाती हैं। इस अवस्था को अपची कहते हैं।

(१) जामुन और कचनार की जड़ को पीस कर उसका कल्क बना कर उसे छान कर सोंठ का

चूर्ण मिलाकर गरम जल में घोल कर नित्य प्रातः सायं पीते रहने से कण्ठमाला में विशेष लाभ होता है।

(२) छोटी जामुन की जड़ का रस और अदरक का रस १-१ तोला लेकर थोड़े गरम जल में मिला कर सुबह-शाम पीने से गण्डमाला दूर होता है।

३८. पलित रोग

प्रौढ़ावस्था से पूर्व, युवावस्था में ही बाल सफेद हो जाने को पलित रोग कहते हैं। क्रोध, शोक और श्रम से उत्पन्न ऊष्मा और पित्त मस्तिष्क में जाकर बालों को पकाकर सफेद कर देते हैं। इसे ही पलित रोग कहते हैं।

जामुन, अर्जुन, कुम्भेर और पियाबाँसा (कट-सरैया) इन चारों के फूल, आम की गुठली, मैनफल और त्रिफला—ये सब ४-४ तोला लेकर कल्क (लुगदी) बनायें। इस कल्क को ३२ तोला तिल तेल, १२८ तोला दूध, १२८ तोला भाँगरे के रस और १२८ तोला महुवा के फलों के रस के साथ कड़ाही में डाल कर मन्दाग्नि से तैल सिद्ध कर लें। जब काढ़ा और दूध जल कर तेल मात्र शेष रह जाय तो उतार कर मल छान लें। इस तेल को सिर में लगाने से बाल भौरे के समान काले हो जाते हैं।

४४

जामुन और उसके सौ उपयोग

इस तेल की नित्य नस्य लेने से एक महीने में शंख के समान सफेद बाल भी काले स्याह हो जाते हैं। इस तैल का नाम 'काश्मियाद्य तैल' है। आयुर्वेद का कथन है कि इस तैल को लगाने वाला सौ वर्ष जीवित रहता है।

३९. नेत्र पीड़ा

नेत्र दुखने या आँखें आने पर नेत्र लाल, शोथ-युक्त हो जाते हैं। उनमें कड़क, जलन, पीड़ा, जल-स्राव और नेत्र खोलने में कष्ट होता है। कभी-कभी आँखों से गाढ़ा स्राव होता है।

जामुन की कोमल पत्तियाँ, हल्दी और लाल चन्दन—सबको महीन पीस कर आँख के ऊपर लेप करने से आँख की पीड़ा शान्त होती है।

४०. मोतियाबिन्द

जामुन की गुठली का अति सूक्ष्म कपड़छन चूर्ण कर शहद में घोट कर ३-३ माशे की गोलियाँ बना लें। प्रातः सायं १-२ गोली गोदुग्ध के साथ खाने और इन्हीं गोलियों को शहद के साथ पत्थर पर घिस कर आँखों में आँजने से नवीन मोतियाबिन्द अवश्य अच्छा हो जाता है।

४१. दन्त विकार

अधिक गर्म या ठण्डी चीजें या अधिक मीठे पदार्थ खाने से और दाँतों की स्वच्छता की ओर ध्यान न देने से दाँत विकार ग्रस्त हो जाते हैं।

(१) जामुन के पत्ते शुष्क कर जला कर सेंधा नमक मिलाकर पीस कर रख लें। इसे नियमित रूप से दाँतों पर मलने से मसूढ़े तथा दाँतों के रोग दूर होकर दाँत स्वच्छ और नीरोग हो जाते हैं।

(२) जामुन की अंतर छाल का महीन चूर्ण कर दाँतों और मसूढ़ों पर मलने से दाँतों के विकार दूर होते हैं। पायरिया में भी लाभ होता है।

४२. दाँतों से खून आना

जामुन की लकड़ी जलाकर राख कर लो। इस राख को दाँतों पर मलने से दाँतों से खून आना बन्द होता है।

४३. मसूढ़ों की सूजन तथा मुख विकार

जामुन की नई पतली उँगली जैसी टहनी की दातून करने से दाँतों के विकार दूर होते हैं।

जामुन की छाल के क्वाथ या फांट से दिन में दो-तीन बार कुल्ला करने और मुख में गण्डूष धारण करने से मसूढ़ों की सूजन, वेदना, पारा

आदि के कारण उत्पन्न शोथ और छाले दूर होते, शान्ति मिलती, मसूढ़े सुदृढ़ होते और दाँत मजबूत होते हैं।

४४. दाँतों और मसूढ़ों की शिथिलता

जामुन की छाल के क्वाथ से कुल्ला करने और जामुन के सुखाये हुए पत्तों की भस्म में थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर मंजन करने से मसूढ़ों की शिथिलता दूर होती तथा दाँत सुदृढ़ हो जाते हैं।

४५. मुख पाक

मुख और जीभ में छाले पड़ जाने को मुख पाक कहा जाता है।

(१) जामुन के कोमल पत्तों को पानी के साथ पीस छान कर पानी में घोल कर कुल्ला करने से मुख के छाले ठीक हो जाते हैं।

(२) जामुन की छाल को पानी में औटा कर उससे कुल्ला करने से मुख के छाले तथा मुख-पाक रोग दूर होता है।

(३) जामुन, पीपल, बरगद, गूलर और पाखर के वृक्षों की छाल को जल में औटा कर कुल्ला करने से मुखपाक में शीघ्र लाभ होता है।

४६. कर्ण पाक

कर्ण पाक, कर्ण स्राव या कान बहना कहे जाने वाले इस रोग में कान में भारीपन, कान में दर्द, सिर दर्द, कर्ण प्रणाली की सूजन, सर्दी के साथ थोड़ा-बहुत ज्वर होना, कान में घूँ-घूँ शब्द होना, श्रवण शक्ति का कम हो जाना, कान से स्राव होना, स्राव में रक्त, रस, श्लेष्मा या पीप होना आदि लक्षण होते हैं।

(१) जामुन, बरगद, आँवला, महुवा और चमेली के पत्तों के रस में तेल पका कर कान में डालने से कान से मवाद बहना बन्द होता है।

(२) जामुन और आम के नये पत्ते, कपास और कैथ के कच्चे फल और अदरक के रस में शहद मिलाकर कान में डालने से कर्ण स्राव दूर होता है।

(३) जामुन के पत्तों का रस या रस से सिद्ध किया हुआ तेल कान में डालने से कान बहना बन्द होता है।

(४) जामुन की गुठली का तेल कान में प्रातः सायं डालने से कान बहना अवश्य बन्द हो जाता है।

४७. स्वर भंग (गला बैठना)

ठंड लगने, जुकाम होने, जोर से बोलने या ऊँची

आवाज में जागने, रात्रि-जागरण आदि कारणों से गला बैठ जाता है।

जामुन की गुठलियाँ महीन पीस कर शहद में मिलाकर जंगली बेर-बराबर गोलियाँ बना लें। दिन में कई बार १-१ गोली मुख में रखकर चूसते रहने से बन्द गला खुल जाता है और आवाज का भारीपन दूर हो जाता है।

पुरुष रोग

४८. धातु स्त्राव

जिनका मसाना कमजोर हो और स्वप्नदोष तथा धातु स्त्राव की व्याधि हो, वे जामुन की गुठली की मींगी महीन पीस कर ४-६ मासे की मात्रा में प्रातः सायं ताजे जल के साथ सेवन करें। १०-१५ दिन के प्रयोग से प्रत्यक्ष लाभ दिखलाई देगा।

४९. प्रमेह

८० प्रकार के प्रमेहों में पेशाब का अधिक होना और पेशाब का गँदलापन प्रमेह का प्रमुख लक्षण है। जामुन की गुठली की गिरी, आम की गुठली की गिरी, बबूल का गोंद, लाल चन्दन, फूल प्रियंगु, इन्द्रजौ, अजवायन, अजमोद, मोचरस गिलोय तथा लौह भस्म—सब समभाग ले महीन चूर्ण कर रख लें।

४ से ८ रत्ती की मात्रा में प्रातः सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करने से यूप एवं रक्त युक्त प्रमेह, लसीका प्रमेह तथा अन्य समस्त प्रकार के उपद्रव युक्त प्रमेह दूर होते हैं। साथ ही अरुचि, अग्निमांद्य, तृषा और ज्वर में भी लाभ होता है।

५०. प्रमेह, मधुमेह और वायु विकार

अच्छे पके जामुनों को कल्पविधि से प्रतिदिन ४ बार, एक बार में ३ छटाँक खाकर ऊपर से १ रत्ती सेंधा नमक चाट लिया करें। इस प्रकार जामुन की मात्रा बढ़ाते हुए १५ दिन तक सेवन करें और फिर क्रमशः घटाते जायँ। इससे उपरोक्त तीनों रोग दूर होकर शरीर में शक्ति का संचार होता है। किन्तु ध्यान रहे कि जामुन में शरीर पोषक सभी आवश्यक तत्त्व नहीं होते। अतः कल्प विधि से जामुन का सेवन करना हो तो जामुन खाने से पूर्व अच्छे मीठे पतले रस वाले आमों को चूस कर उसके पश्चात् जामुन खाना चाहिए। तत्पश्चात् २-३ घण्टे बाद दूध पीना चाहिए।

मधुमेही की तृष्णा की शान्ति के लिए जामुन के रस में समभाग आम का रस मिलाकर पिलाना चाहिए।

५१. उपदंश-जन्य लिंग सूजन और पीड़ा

जामुन की छाल, बट के अंकुर, अर्जुन वृक्ष की छाल, हरड़, हल्दी और लोध—ये सब समभाग ले पानी के साथ सिल पर बारीक पीस लें। फिर इसे एक कटोरी में डाल कुछ गर्म कर लिंग पर लेप करने से उपदंश से उत्पन्न लिंग की सूजन और पीड़ा दूर हो जाती है।

५२. उपदंश के ब्रणों पर

जामुन की छाल, बेल की छाल, आंवले की पत्तियाँ, करंज की पत्तियाँ, नीलोफर कमल, बला, आम की गुठली, मुलहठी, प्रियंगु के फूल, लाख, लाल चन्दन और निशोथ—सब द्रव्य १-१ तोला लेकर गौ के बछड़े के मूत्र में पीस कर लुगदी बना ले। फिर इस लुगदी को १ सेर तिल तेल में डालकर पकावे। पक जाने पर छान ले। इस तेल के लगाने से उपदंश के सब प्रकार के घाव, फोड़े-फुंसियों और खाज में अत्यन्त लाभ होता है।

नारी रोग**५३. रजोधर्म में अधिक रक्त स्राव**

जामुन की ताजा हरी अंतर छाल १ तोला जल के साथ महीन पीस छान कर आध पाव पानी के साथ

पीने से मासिक धर्म में अधिक परिमाण में रक्त गिरना बन्द होता है।

५४. वातज रजस्राव विकार

वायु पीड़ित मासिक धर्म में लाल कुसुम के रंग का अल्प मात्रा में रक्त स्राव होता है। कटिशूल, योनिशूल और ज्वर बना रहता है। ऐसी दशा में गर्भ स्थापना नहीं होती।

इस विकार में जामुन की जड़ की छाल, आम की जड़ की छाल, छोटी कटेरी की जड़ और बड़ी कटेरी की जड़—चारों चीजें छाया में शुष्क कर समान भाग ले कूट पीस कर कपड़छन चूर्ण बना कर रख लो। जिस दिन से मासिक धर्म आरम्भ हो, उस दिन से नित्य प्रातः काल ६-६ माशे चूर्ण गर्म जल या गोदुग्ध के साथ सेवन करने से मासिक धर्म खुल कर होने लगता है और योनि शुद्ध हो जाती है। रजोधर्म बन्द हो जाने पर औषधि-सेवन बन्द कर देना चाहिए। फिर लक्ष्मणा को दूध के साथ पीस कर पीने तथा दाहिने नासिका छिद्र से नस्य लेने से पुत्र और बायें नासिका छिद्र से नस्य लेने से कन्या सन्तति का जन्म होता है। इसके प्रयोग के पश्चात् थूकना नहीं चाहिए।

५५. विप्लुता योनि रोग

जिस योनि में निरन्तर पीड़ा या भीतर की ओर सदा एक प्रकार का दर्द सा होता रहता है, उसे विप्लुता योनि कहते हैं।

जामुन, धव, मदन मंजरी, शालई—इन सबकी छाल और पंचबलकल (पीपल, गूलर, बरगद, पाखर, और बेत की छाल) का काढ़ा बना कर तेल में पकावें फिर छान कर रख लें। इस तेल में रुई का फाहा तर कर योनि में रखने से विप्लुता योनि रोग नष्ट होता है।

५६. योनि रोग

मिथ्याचार, मिथ्या विहार, विकृत रजस्राव, वीर्य दोष और दैवेच्छा आदि कारणों से योनि रोग उत्पन्न होते हैं।

जामुन के पत्तों के क्वाथ में शहद मिलाकर उसकी (पिचकारी) देने से योनि सम्बन्धी रोग ठीक होते हैं।

५७. बंध्या उपचार

जामुन की जड़, आम की जड़ छोटी-बड़ी दोनों कटेली की जड़—इन चारों जड़ों की छाल समभाग ले गोदुग्ध में पीस कर, जब तक ऋतु काल में रक्त स्राव

होता रहे, तब तक पिलावें। इससे वात विकार-जन्य गर्भ दोष मिटकर बन्ध्यत्व दोष दूर होकर स्त्री गर्भ धारण करती है। इस औषधि सेवन के पश्चात् ऋतु स्नान के बाद लक्ष्मणा को गोदुग्ध में पीस कर गोदुग्ध के ही साथ पीना और नस्य लेना चाहिए।

५८. गर्भिणी का अतिसार

(१) जामुन और आम के वृक्षों की अंतर छाल २-२ तोले लेकर १६ गुने जल में पकावें। चतुर्थांश जल शेष रहने पर, उसकी तीन मात्रायें कर, दिन में तीन बार धनिया व जीरा चूर्ण २-२ माशा मिला कर पिलाने से गर्भिणी का अतिसार ३-४ दिन में पूर्णतः अच्छा हो जाता है।

(२) जामुन और आम की छाल का क्वाथ बना कर उसमें धान के खीलों का सत्तू डालकर पीने से गर्भिणी का अतिसार और ग्रहणी रोग दूर होता है।

(३) जामुन और आम वृक्षों की छाल का क्वाथ बना कर उसमें धनिया चूर्ण और मिश्री डाल कर पीने से गर्भिणी का अतिसार आराम होता है।

५९. गर्भिणी की संग्रहणी

जामुन तथा आम के वृक्षों की छाल १-१ तोला लेकर आध पाव पानी में पकावे। ३-४ तोला पानी शेष रहने पर छान कर उसमें धान की खीलों का चूर्ण डालकर गर्भिणी को चटाने से उसका अतिसार तथा संग्रहणी रोग दूर होता है।

६०. नया प्रदर

बिना ऋतु काल के स्त्री की योनि से सफेद, काला और लाल रंग का स्राव होना प्रदर रोग कहा जाता है।

नये प्रदर में गरम-गरम पानी जैसा स्राव होता है।

जामुन की छाल २ तोला आध सेर पानी में पका कर चतुर्थांश क्वाथ कर शहद डाल कर प्रातः सायं पीने से नया प्रदर शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

६१. श्वेत प्रदर

(१) जामुन की अंतर छाल को छाया में सुखा कर महीन चूर्ण कर ४ से ६ मासे की मात्रा में प्रातः सायं गाय या बकरी के दूध के साथ पीने से श्वेत प्रदर अच्छा हो जाता है।

(२) जामुन की गुठली का चूर्ण ३ मासे चावल के धोवन या चावल के पानी के साथ पीने से श्वेत प्रदर में अवश्य लाभ होता है।

६२. रक्तप्रदर

(१) १ तोला जामुन के पत्तों का रस या जामुन के कोमल पत्तों को पीस छान कर पाव भर गाय के दूध में मिलाकर दिन में तीन बार पीने से रक्त प्रदर दूर होता है।

(२) छाया में सुखाई जामुन की अंतर छाल के चूर्ण को जामुन की अंतर छाल के रस की लौह खरल में २१ भावनायें दें और १० भावनायें गूलर की छाल के रस की देकर सुखा कर शीशी में रख लें। प्रातः सायं यह चूर्ण १-२ मासे की मात्रा में लेकर अधपके केले के गूदे में मिलाकर चटावें। पथ्य में दूध, दलिया, मूंग का हलुवा, पुराने चावलों की खीर आदि दें। नमकीन चीजें, लाल मिर्च, मसाला, सिरका आदि तीक्ष्ण वस्तुओं से परहेज रखें। इस प्रकार रक्त प्रदर शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

६३. सर्वप्रदर

(१) प्रदरान्तक क्वाथ—जामुन की छाल, आम

की छाल, अशोक की छाल, झड़वेरी की जड़ प्रत्येक समान भाग लेकर दरदरा चूर्ण बना कर रख लें। १ तोला यह चूर्ण १६ तोला जल में पकावें। ४ तोला शेष रहने पर छान लें। इस क्वाथ का नित्य प्रातः सायं सेवन करने से लाल और सफेद प्रदर दोनों दूर होते हैं।

(२) जामुन की गुठली की गिरी, कमलगट्टे की गिरी, शुद्ध बंशलोचन, समभाग। कमलगट्टे की गिरी के बीच वाला हरा भाग फेंक दें। तीनों द्रव्यों का महीन चूर्ण कर सबके बराबर देशी खाँड़ चूर्ण में मिलावें। नित्य प्रातः सायं ३ माशे की मात्रा में धारोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करने से सब प्रकार के प्रदर १५-२० दिन में दूर हो जाते हैं।

६४. पुराना प्रदर

पुराने जामुन वृक्ष की अंतर छाल छाया में सुखा कर जला लें। भस्म का रंग सफेदी लिए भूरे रंग का हो जाने पर भली-भाँति घोट कर रख लें। प्रातः निराहार मुख १-१½ माशे और दोनों समय भोजन के १ घण्टे बाद ताजे जल के साथ निरन्तर कुछ दिनों तक नियमित रूप से सेवन करने से हर प्रकार

का पुराने से पुराना प्रदर कुछ दिनों में अच्छा हो जाता है।

६५. प्रदर, योनिरोग, अतिसार आदि

पुष्यानुग चूर्ण—जामुन की गुठली की गिरी, आम की गुठली की गिरी, पाढ़, पाषाणभेद, रसौत, नागरमोथा, मोचरस, मजीठ, कमलकेशर, केशर, अतीस, मोइया, बेलगिरी, लोध, गेरू, कायफल, कालीमिर्च, सोंठ, दाख, लाल चन्दन, श्योनाक, कुडा, अनन्तमूल, धाय के फूल, मुलहठी और अर्जुन इन सबको पुष्य नक्षत्र में बराबर-बराबर लेकर पीस छान कर रख लें। इस पुष्यानुग चूर्ण को १½ से ३ माशे की मात्रा में शहद में मिलाकर चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से सब प्रकार के प्रदर-रोग, योनिदोष, रजोदोष, अतिसार, रक्तातिसार, बालकों के आगन्तुक रोग नष्ट होते हैं। बहुपरीक्षित पुराना शास्त्रीय योग है।

६६. सोमरोग

जिस प्रकार पुरुषों को बहुमूत्र रोग होता है, उसी प्रकार स्त्रियों को सोमरोग होता है। इस रोग में स्त्री की योनि से निर्मल, शीतल, गन्धरहित, स्वच्छ, सफेद और पीड़ा-रहित जल बहता रहता है, जिससे

रुग्णा की धोती सदैव गीली बनी रहती है। स्त्री जल के वेग को रोक नहीं सकती। बिल्कुल निर्बल हो जाने के कारण अशान्त रहती है। मस्तिष्क शिथिल हो जाता है। मुख और तालू सूखते हैं, जँभाई आती और त्वचा रूखी हो जाती है। स्त्री को खाने-पीने के पदार्थों से कभी तृप्ति नहीं होती। इस रोग में सोम धातु का नाश होता है, जो शरीर को धारण करने वाला होता है। इसलिए इसे सोमरोग कहते हैं। जब सोमरोग पुराना हो जाता है, तो वह मूत्रातिसार हो जाता है।

जामुन की मींगी का चूर्ण १ मासे की मात्रा में मधु के साथ सेवन करने से सोमरोग में लाभ होता है। यदि वसन्त कुसुमाकर रस में जामुन की मींगी का चूर्ण मिलाकर सेवन किया जाय तो और शीघ्र लाभ होता है।

६७. प्रसूता का दुग्ध विकार

जामुन की छाल, धाय के फूल, इलायची, मजीठ, कालीमिर्च, मुलहठी सब समान भाग ले चूर्ण कर ले। यह चूर्ण ३ से ६ मासे तक की मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से किसी भी दोष से दूषित

प्रसूता स्त्री का दूध शुद्ध और विकार-रहित हो जाता है।

६८. स्तन पुष्टीकरण

जामुन की छाल, अनार के छिलके, मौलसिरी की छाल, छोटी माई, लोध, जौ—इन सबको जल के साथ सिल पर पीस कल्क कर तिल तेल में पकावे। तेल सिद्ध हो जाने पर छान कर बोतल या शीशी में रख ले। इस तेल की स्तनों पर मालिश करने तथा कपड़े या रुई में भिगोकर पट्टी बाँधने से लटके या ढले हुए स्तन पुनः पुष्ट और कठोर हो जाते हैं।

६९. भग-संकोचन

(१) धाय के फूल तथा त्रिफला को जामुन की छाल के रस में पीस कर लेप करने से वृद्धा स्त्री की भी योनि कन्या की योनि के समान दृढ़ और संकुचित हो जाती है।

(२) जामुन की जड़ की छाल, लोध और धाय के फूल इन सबको पीस कर शहद में मिलाकर योनि में लेप करने से योनि निश्चित रूप से सिकुड़ कर संकीर्ण हो जाती है।

बाल रोग

७०. बालातिसार

जामुन की अंतर छाल का रस बकरी के दूध में मिलाकर पिलाने से बालकों के बहुत दिनों से होने वाले दस्त बन्द होते तथा अपचन दूर होता है।

७१. वमन, ज्वर, रक्तातिसार

जामुन व आम की कोपलें छाया में सुखाई हुई, पीपल, मुलहठी सब समान भाग चूर्ण कर २-४ रत्ती १०-१२ बूँद मधु या माँ के दूध के साथ देने से बालकों के वमन, ज्वर, रक्तातिसार में बहुत लाभ होता है।

७२. डब्बा (पसली चलना)

डब्बा रोग में साँस लेते समय बच्चे की पसलियों के नीचे एक गड्ढा सा पड़ने लगता है, बच्चा बड़े कष्ट के साथ साँस लेता है और साथ ही ज्वर भी हो जाता है। यह बच्चों का एक प्रकार का न्युमोनिया है।

जामुन की छाल, करेले के पत्ते, अडूसे के पत्ते और पक्के नागर पान—इन सबके रस में वच घिस कर पिलाने और बच्चे को पथ्य-पूर्वक रखने से पसली चलना बन्द होता है। जब तक रोग आराम

न हो, दिन में तीन-चार बार ४-५ दिन तक यह प्रयोग चालू रखना चाहिए।

७३. बच्चों की हिचकी

जामुन की छाल, तेंदू के फल और फूल—इन तीनों को पीस कर १ माशे घी और २ माशे शहद मिलाकर चटाने से बालकों की हिचकी बन्द होती है।

७४. बालकों के ब्रण

जामुन, पीपल, गूलर, बरगद, पाखर और वेत की छाल, मुलेठी, मजीठ, चन्दन, खस और पद्माख—इनको महीन पीस कर लेप करने से बच्चों के फोड़े-फुंसी और घावों की जलन, लाली, विस्फोटक पीड़ा दूर होकर ब्रण आराम हो जाते हैं।

७५. बालक का मुखपाक

जामुन की छाल या पत्तों को महीन पीस कर शहद में मिलाकर लगाने से बालकों के मुख के छाले अच्छे हो जाते हैं।

७६. विसर्प (सुखमादा)

खारी, खट्टे, तीखे, गरम पदार्थों के अधिक सेवन से दोषों का कोप होकर विसर्प हो जाता है। इसे बोलचाल की भाषा में सुख बाद या सुखमादा कहते हैं। विसर्प सात प्रकार का होता है। विसर्प

में रक्त, लसीका, त्वचा, मांस दूषित होकर वे वात, पित्त, कफ तीनों को दूषित करते हैं। विसर्प में सूजन, सुई चुभने जैसी, चीरने जैसी पीड़ा और रोमांच होता है। सम्पूर्ण शरीर जलता हुआ जान पड़ता है। पित्तज विसर्प लाल रंग, कफज विसर्प खजलीयुक्त स्निग्ध और कफज्वर जैसी पीड़ा होती है।

(१) जामुन, अडूसा, नीम, परवल पत्र, गिलोय और सोंठ—इन सब का काढ़ा बना कर पिलाने से विसर्प रोग दूर होता है।

(२) जामुन की छाल, जिक आक्साइड, सोना गेरू, सफेद कत्था सबको महीन पीसकर गुलाब जल में मिलाकर लगाने से विसर्प दूर होता है।

७७. सिध्म (सेहुँवा या छोप)

पित्त-विकार और रक्त दोष से मुँह, गर्दन, पेट, पीठ पर सफेदी लिए वेदना रहित तमाम छोटे-छोटे दाग धब्बे हो जाते हैं, जो बहुत भद्दे लगते हैं। इसे संस्कृत में सिध्म और बोल चाल की भाषा में सेहुँवा या छीप कहते हैं।

(१) जामुन की जड़ और शुद्ध आँवलासार

गन्धक एक में पीसकर नींबू के रस में घोट कर लगाने से सेहुँवा के दाग दूर होते हैं।

(२) जामुन की पत्तियाँ, आँवलासार गन्धक, मूली के बीज, पवार के बीज, सेंधा नमक और सरसों सब को महीन पीसकर सरसों के तेल में घोट कर रख लें। इस तेल को शरीर पर लगा कर दो घण्टे बाद स्नान करें। स्नान के बाद तिल्ली के तेल में कपूर मिलाकर मालिश करें। इस उपचार से सिध्म के दाग नष्ट हो जाते हैं।

७८. मुख के मस्से

वात प्रकोप से शरीर के ऊपर जो वेदना-रहित उर्द के दानों के समान काला ऊँचा मांस का अंकुर हो जाता है, उसे माष या मस्सा कहते हैं।

जामुन के सिरके में मोर की बीट पीस कर सुबह-शाम मस्सों पर लगाने से ८ दिन में मुँह के मस्से नष्ट हो जाते हैं। जलन नहीं होती।

७९. युवापिडिका या मुँहासे (Acne)

यह युवावस्था में होने वाला शोथ युक्त चर्म विकार है। इसमें युवकों और नवयुवतियों के मुख पर कीलें (फुंसियाँ) निकल आती हैं, जो आगे चल

कर बहुत कठोर हो जाती हैं और उनमें पीप पड़ जाती है ।

जामुन की गुठलियों को स्वच्छ चिकने पत्थर पर घिस कर लगाने से मुहाँसे दूर हो जाते हैं ।

८०. झाँई

परिश्रम तथा क्रोध से कुपित पित्त के साथ वायु मुख में आकर जो वेदना रहित काले धब्बे मुख पर उत्पन्न कर देता है, उसे व्यंग या झाँई कहते हैं । अनुचित और दूषित आहार-विहार भी झाँइयों की उत्पत्ति का एक मुख्य कारण है ।

(१) जामुन तथा आम की गुठली की मींगी को तिलों के साथ पीस कर लगाने से मुख की झाँइयाँ दूर होती हैं ।

(२) जामुन की गुठली और आम की गुठली पानी में पीस कर मुख पर लेप करके २ घण्टे बाद मुख को गर्म पानी से धो डालने से मुख की कील, झाँइयाँ, मुहाँसे दूर होकर मुख की कांति बढ़ती है ।

८१. शरीर गंध

जामुन के पत्तों को पीस कर लेप करने से शरीर की दुर्गन्ध दूर होती है ।

८२. अधिक पसीना और दुर्गन्धि

जामुन के पत्ते, अर्जुन के फूल तथा कूट का चूर्ण थोड़े पानी में पीस कर उबटन लगाने से अधिक पसीना निकलता और शरीर की दुर्गन्धि का नाश होता है ।

८३. अग्नि दग्ध

जामुन की छाल या पत्ते पीस कर जले हुए स्थान पर लेप करने से दग्ध स्थान की जलन और पीड़ा शान्त होती तथा ब्रण अच्छा हो जाता है ।

८४. अरुंधिका (बाराही या गंज)

रक्त, कफ और कृमियों के प्रकोप से सिर में बहुत सी क्लेद युक्त फुंसियाँ हो जाने को 'अरुंधिका' और बोल-चाल की भाषा में बाराही या गंज कहते हैं ।

जामुन, नीम और खैर की छाल को चूर्ण कर गोमूत्र में पीस कर लेप करने से अरुंधिका आराम होती है ।

८५. कखवारी या कखराली

बाहु के नीचे काँख के बगल में होने वाले गाँठयुक्त फोड़े को संस्कृत में 'विदारिका' और बोल-चाल की

भाषा में कखवारी या कखराली कहते हैं। कखवारी हो जाने पर हाथ ऊपर नहीं उठ पाता और फोड़े में बड़ी जलन और पीड़ा होती है। पक जाने पर यह बिना आपरेशन के नहीं फूटती। चीरने पर कखवारी से बहुत मवाद निकलती है। कभी-कभी एक गाँठ पक कर अच्छी हो जाने पर दूसरी गाँठ पैदा हो जाती है।

जामुन की छाल, मुलहठी, कुटकी तथा पठानी लोध के शीतकषाय से कखवारी का सिंचन करने और इन्हीं द्रव्यों के स्वरस या क्वाथ द्वारा सिद्ध किये गये घृत का लेप करने से कखवारी आराम होती है।

८६. फोड़ा पकाने के लिए

छोटी जामुन की पत्तियों की पुल्टिस बना कर बाँधने से फोड़ा शीघ्र ही पक जाता है।

८७. घावों के लिए मलहम

जामुन, पीपल, गुलर, बट, पाखर, बबूल, बेर, खैर, आम आदि वृक्षों की पत्तियाँ करीब १-१ तोला लेकर स्वच्छ सिल पर पीस कर लुगदी बना लें। फिर लुगदी को लगभग २ सेर पानी में घोल कर

किसी बड़े और साफ बरतन में छान लें। इसके पश्चात् तेल को चूल्हे पर चढ़ा दें और उसमें मोम डाल दें। जब मोम पिघल कर तेल में मिल जाय, तब पत्तियों के छने हुए पानी में उस पिघले हुए मोम वाले तेल को गरम-गरम ही कपड़े में छान दें। थोड़ी देर बाद उस पानी पर जमे हुए पदार्थ को करछुल से उठा-उठा कर किसी चौड़े मुख की काँच की शीशी या चीनी के प्याले में रख लें। बस मलहम तैयार है। इसे अच्छी तरह मथ कर पानी नितार दें। इसे हर प्रकार के घावों पर लगाने से घाव शीघ्र ही भर जाता है। एक साफ कपड़ा लेकर घाव के बराबर उसकी चकती बना कर उसे पानी में भिगोकर दबा कर निचोड़ लें और किसी स्वच्छ पत्थर या बर्तन के ऊपर फैला कर उस पर यह मलहम लगा दें और इसे घाव पर चिपका दें। घाव को प्रति दिन नीम की पत्तियाँ डाल कर उबाले हुए पानी से धोकर नई पट्टी बदल लें। घाव को साबुन से न धोयें।

इस मलहम के प्रयोग से फोड़े-फुंसी के घाव, चाकू, छुरी आदि से कटे हुए घाव, आग से जले हुए, पत्थर आदि की चोट लगने से उत्पन्न घाव

हर प्रकार के घाव भर कर ठीक हो जाते हैं। सरल, सस्ता और गुणकारी मलहम है।

८८. ब्रणादि के कारण विकृत त्वचा के रंग पर
घाव अच्छा हो जाने पर प्रायः त्वचा सफेद और बदरंग हो जाती है।

जामुन तथा आम के पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, नया गुड़—सब समभाग ले दही के पानी में पीस कर लेप करने से घाव के कारण बदरंग त्वचा का रंग पूर्ववत् हो जाता है।

८९. जूते काटने पर

तंग और कठोर चमड़े का जूता पहनने पर पैरों की त्वचा कट कर जो जख्म हो जाता है, उस में बड़ी जलन होती है।

जामुन की गुठली पत्थर पर घिस कर लगाने से जूते काटने का ब्रण अच्छा हो जाता है।

९०. पेट में बाल या लोहा चले जाने पर

(१) पेट में बाल या लोहे का अंश चला गया हो तो जामुन खाने से वह नष्ट हो जाता है।

(२) पेट में बाल चला जाने से अति उग्र पीड़ा हो तो जामुन का सिरका ३ से ५ माशे की

मात्रा में समभाग जल मिला कर पीने से तुरन्त शान्ति मिलती है।

९१. घाव से रक्त स्राव

रगड़ लग जाने या चाकू, छुरी आदि से कोई अंग कट जाने पर रक्त बह रहा हो, तो जामुन की छाल या पत्तियों को पीस कर लेप करने से रक्त स्राव रुक जाता और घाव नहीं पकता।

९२. अन्हौरियाँ (घमौरियाँ)

जून-जुलाई के महीनों में कुछ लोगों के शरीर में छोटी-छोटी तमाम फुंसियाँ हो जाती हैं। जब ये फुंसियाँ पकती हैं और गर्मी अधिक होती है, तो इन में बड़ी खुजली होती है और खुजलाने से जलन होती है। इन्हें अन्हौरियाँ या घमौरियाँ कहते हैं।

जामुन की पत्तियों को पीस कर उसमें सोडा वाई कार्ब (खाने का सोडा) मिला कर लेप करने से अन्हौरियाँ नष्ट हो जाती हैं।

९३. आम का अजीर्ण

यदि अधिक आम खा लेने से अजीर्ण हो गया हो तो १०-१५ तोला जामुन का रस या १-२ तोले

जामुन का सिरका पानी मिला कर पी लेने से आम का अजीर्ण दूर हो जाता है।

स्थायर जंगम विष

१४. सर्प विष

जामुन की ढाई पत्तियाँ पानी में पीस छान कर आध-आध घंटे पर पिलाने से साधारण सर्प विष उतर जाता है।

१५. बिच्छू विष

बिच्छू के दंश स्थान पर जामुन के पत्तों का रस लगाने और पत्तों को पीस कर लुगदी बाँधने से विष का प्रभाव शान्त होता है। १०-१० मिनट के अन्तर पर पत्र-रस लगा कर लुगदी बाँधना चाहिए।

१६. श्वान विष

कुत्ता काटने पर जामुन की गुठली की गिरी का चूर्ण ६ माशे से १ तोले तक गो दुग्ध के साथ दिन में कई बार पिलाना लाभदायक है।

१७ वत्सनाभ विष

जामुन के वृक्ष की छाल का रस समभाग कांजी के साथ जल में मिला कर पिलाने या जामुन

की गुठली की गिरी का चूर्ण गो दुग्ध के साथ हर आध घंटे के अन्तर पर पिलाने से वत्सनाभ का विष शान्त होता है।

१८. कुचले के विष पर

जामुन की गुठली का चूर्ण ६ माशे से १० माशे तक गो दुग्ध या जल के साथ चार-छै बार पिलाने से कुचले का विष शान्त होता है।

१९. अफीम का विष

जामुन के पत्तों का रस १ तोला प्रति आध घंटे के अन्तर पर कई बार पिलाने से अफीम के विष का प्रभाव दूर होता है।

१००. भाँग का नशा

भाँग का नशा अधिक चढ़ जाने पर २-२½ तोला जामुन के पत्तों को पानी के साथ पीस कर आध पाव जल में घोल छान कर पीने से भाँग का नशा शीघ्र ही शान्त हो जाता है।

—:—

❀ स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें ❀

हड़ और उसके सौ उपयोग	...	४) ५० पै०
डाक्टर जौ	...	३) ६० पै०
अदरक, सोंठ, हल्दी, पीपल	...	२)
अंगूर, अनार, सेब, संतरा	...	२)
मांस व अंडे के गुण दोष	...	२)
पपीता, केला, अमरूद, शरीफा	...	२) ५० पै०
अमृतफल आंवला	...	२)
चाय के गुण और दोष	...	२)
डाक्टर दूध	...	२)
डाक्टर तुलसी	...	२)
डाक्टर आम	...	२)
डाक्टर गन्ना	...	२)
डाक्टर जल	...	२)
डाक्टर त्रिफला	...	२)
डाक्टर गेहूँ और डाक्टर चना	...	२)
डाक्टर शहद	...	२)
डाक्टर बेल	...	२)
दाल	...	२) ५० पै०
प्याज के उपयोग	...	२)
दूध और दूध से बनी चीजें	...	२) ५० पै०
नमक के गुण और दोष	...	२)
टमाटर, करैला, बैंगन, परवल	...	२)
नीम और उसके सौ उपयोग	...	२)
नींबू और उसके सौ उपयोग	...	२)
मिट्टी चिकित्सा	...	२)
मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर	...	२) ५० पै०
सूखे मेवे	...	२)
सोयाबीन	...	२)
तम्बाकू के गुण और दोष	...	२)

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड,

पोस्ट बॉक्स ८५, १-त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ—२२६००१